04- फोगाट 50 किलोग्राम वजन में खेलने वाली खिलाड़ी नहीं

05- जब शोर-शराबे के बीच शांत हो गया विशाल कैनवास

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 11 अगस्त, 2024

06- तिरंगा हर भारतवासी का गौरवः हेमंत खंडेलवाल

07- कई बार दोहराए गए कुछ फिल्मों के टाइटल!

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 288 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

जैसे जिंदगी का रास्ता...

फोटो- ऋतुराज बुड़ावनवाला

वायनाड़ के पीड़ितों से मिले मोदी, बांटा लोगों का दर्द

नई दिल्ली (एजेंसी)। केरल के वायनाड में कुछ दिन पहले भूस्खलन के कारण 400 से अधिक लोगों की मौत हो गई। इस दुर्घटना में 150 से अधिक लोग अभी भी लापता हैं। हालात का जायजा लेने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खुद शनिवार को केरल के दौरे हैं। पीएम मोदी वायनाड

हवाई सर्वेक्षण के बाद सड़क मार्ग से भी लिया जायजा

पीएम ने राज्यपाल और सीएम के साथ की समीक्षा बैठक

पहुंच चुके हैं। पीएम मोदी के साथ केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान, मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन और केंद्रीय पर्यटन राज्य मंत्री सुरेश गोपी भी मौजूद हैं। पीएम मोदी हेलीकॉप्टर से वायनाड के लिए रवाना हुए। पीएम मोदी ने कल्पेट्टा में भूस्खलन से तबाह हुए चार गांवों का हवाई निरीक्षण किया। इसके बाद कुछ राहत शिवरों और अस्पतालों में भर्ती मरीजों से भी मिलेंगे। पीएम मोदी एक समीक्षा बैठक भी करेंगे और इसमें मुख्यमंत्री, राज्यपाल के अलावा राज्य के बड़े अधिकारी भी हिस्सा लेंगे। पीएम मोदी समीक्षा बैठक के बाद नई दिल्ली वापस आ जाएंगे। बता दें कि केंद्र सरकार ने भी राज्य के प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करने के लिए एक समिति का गठन किया है। यह समिति पिछले दो दिनों से वायनाड में है और शनिवार को अपना दौरा पूरा करेगा। इसके बाद हुए नुकसान पर अपनी रिपोर्ट देगा। प्रधानमंत्री के दौरे से पहले ही बचावकर्मियों को वायनाड में तैनात किया गया था।

सुप्रभात

बस एक ही फ़र्क है
दुनिया जीत लेने और
कभी हिम्मत न हारने में
पहले में दुनिया डर कर
झुकने लगती है सामने
दूसरे में देखकर तुम्हें
झुके हुए कंधे भी उठ जाते हैं
और चल पड़ते हैं
आसमान सरीखे दुखों को
अपनी जिजीविषा के परों से नापने।

– आलोक कुमार मिश्रा

इतिहास गवाह है, बहनों के रक्षासूत्र ने संभाली बिगड़ते संबंधों की डोर : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

लाड़ली बहनों के साथ लाड़ले भाईयों के लिए भी योजना बना रही है सरकार

भोपाल /टीकमगढ़(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि रक्षाबंधन जैसे त्यौहार की श्रेष्ठता इसी बात से समझी जा सकती है कि अतीत में बहनों के रक्षासूत्र ने बिगड़ते संबंधों की डोर संभाली और हथियार डलवा कर युद्धों को भी समाप्त करवा दिया। बहनों के सम्मान में आज पूरे प्रदेश में 25 हजार से अधिक स्थानों पर रक्षाबंधन का कार्यक्रम मनाते हुए बहनों को उनके खातों में 1500 की राशि हस्तांतरित की जा रही है। भाई-बहन का त्यौहार सर्वोत्तम टीकमगढ़ में हम किसी बात की कमी नहीं होने देंगे। राज्य सरकार किसी भी योजना को बंद नहीं करेगी और लाड़ली बहनों के लिए लगातार कार्य करती रहेगी। आज एक करोड़ 39 लाख लाड़ली बहनों को 1250 रुपए प्रतिमाह मिलने के साथ 250 रुपए की उपहार राशि भी प्राप्त होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने टीकमगढ़ 'एक पेड़ मां के नाम अभियान' में पुलिस परेड ग्राउंड पर कटहल का पौधा रोपा। कार्यक्रम में राज्यसभा सदस्य श्रीमती माया नारोलिया, श्री अनिल जैन, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती उमिता-राहुल सिंह, जनप्रतिनिधि तथा बड़ी संख्या में लाड़ली बहनें उपस्थित थीं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार लाड़ली बहनों के साथ लाड़ले भाइयों के लिए भी योजना बना रही है। इसमें प्रदेश में जिसके अंतर्गत स्थापित होने वाले उद्योगों में उन्हें रोजगार के अवसर मिलेंगे।

लाड़ली बहनों को मिले 1500 रुपए

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने श्योपुर से प्रदेश की 1.29 करोड़ लाड़ली बहनों के खातों में 1500-1500 रुपए के हिसाब से 1897 करोड़ रुपए की राशि ट्रांसफर की। इसमें लाड़ली बहना योजना की राशि के रूप में 1250 रुपए और 250 रुपए रक्षाबंधन के लिए शामिल है। सीएम डॉ. मोहन यादव शनिवार को श्योपुर जिले के विजयपुर में आयोजित 'स्व-सहायता समूह सम्मेलन तथा रक्षाबंधन एवं श्रावण उत्सव' कार्यक्रम में शामिल हुए। यहां उन्होंने सिंगल क्लिक के माध्यम से लाड़ली बहनों के खाते में रुपए भेजे और बहनों को शुभकामनाएं दीं।

हितलाभ वितरित किये

मुख?यमंत्री डॉ. यादव ने विभिन?न योजनाओं के हितग्राहियों को 3 करोड़ 36 लाख 60 हजार 262 रूपये एवं आजीविका मिशन में 184 स्व-सहायता समूहों को तीन करोड़ बारह लाख रूपये के स्वीकृति पत्र प्रदान किये।

मुख्यमंत्री मोनिया नृत्य में हुए शामिल

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अगवानी बुंदेलखंड के प्रसिद्ध मोनिया दोहों के साथ नृत्य की सुंदर प्रस्तुति के साथ हुई। डॉ. यादव स्वयं भी मोनिया नृत्य में शामिल हुए।

प्यारे भैया ने भांजियों को झुलाया झूला

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का स्वागत रक्षाबंधन एवं श्रावण उत्सव में लाडली बहनों ने बुंदेली बधाई गायन से किया। मुख्यमंत्री ने अपनी प्यारी भांजियों को सावन का झूला झुलाया। बहनों ने अपने प्यारे भैया के लिये सावन गीत गाये। मुख्यमंत्री ने बहनों द्वारा सजाए गए पोषण मटके का अवलोकन किया। लाड़ली बहनों के लाडले भैया ने सेल्फी भी ली। बहनों ने बुन्देलखण्ड के विशेष व्यजंन भी बनाये। बहनों ने भैया को गुजियाँ खिलाई, अभिनंदन पत्र भी किया भेंट।

कानून व्यवस्था सुधार लें नहीं तो रद्द कर देंगे प्रोजेक्ट

- केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने भगवंत मान को दे दी वॉर्निंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय राजमार्ग एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने पत्र लिखकर पंजाब के मुख्यमंत्री को चेतावनी दी है। उन्होंने कहा है कि राज्य में कानून व्यवस्था ठीक नहीं है। अगर इसे सुधारा नहीं जाता है तो एनएचएआई आठ हाईवे प्रोजेक्ट रद्द कर देगा। दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेस वे पर हो रहीं हिंसक घटनाओं को देखते हुए केंद्रीय मंत्री ने यह चेतावनी भरा पत्र लिखा है। बता दें कि इन आठ प्रोजेक्ट की कुल लागत 14288 करोड़ है। बता दें कि दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेस वे के निर्माण के दौरान कई जगहों पर काम रोकने के लिए हिंसक घटनाएं देखने को मिलीं। यह एक्सप्रेस वे राजधानी दिल्ली से माता वैष्णोदेवी कटरा तक बनाया जा रहा है।

17 महीने बाद सच्चाई और ईमानदारी की हुई जीत

जेल के ताले टूटेंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को सुप्रीम कोर्ट से बेल मिल गई है और वह बाहर आ चुके हैं। शनिवार को मनीष सिसोदिया ने दिल्ली के प्राचीन हनुमान मंदिर में जाकर भगवान के दर्शन किए और इसके बाद वह महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देने के लिए राजघाट

चले गए। राजघाट से वापस लौटने के बाद मनीष सिसोदिया सीधा आम आदमी पार्टी के मुख्यालय पहुंचे और कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। इस दौरान मनीष सिसोदिया के निशाने पर बीजेपी और केंद्र सरकार रही। मनीष सिसोदिया ने कहा कि हमारे असली साथी (अरविंद केजरीवाल) अभी भी जेल में बंद हैं और वह जल्द बाहर आएंगे। इसके बाद मनीष सिसोदिया ने नारे लगाए कि जेल के ताले टूटेंगे, अरविंद केजरीवाल छूटेंगे। ईडी और सीबीआई का जाल बुना गया है।

एसटी/एससी रिजर्वेशन में लागू नहीं होगा क्रीमी लेयर

- केंद्र सरकार का फैसला, सुप्रीम कोर्ट ने कहा था- सरकार को विचार करना चाहिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। अनुसूचित जाति और जनजातियों (एससी/एसटी) के आरक्षण में क्रीमी लेयर लागू नहीं किया जाएगा। पीएम नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को संसद भवन में उनसे मिलने आए 100

दलित सांसदों को यह आश्वासन दिया। देर शाम केंद्र ने इसकी घोषणा भी कर दी। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस बीआर गवई ने 1 अगस्त को यह टिप्पणी की थी कि एससी-एसटी में भी क्रीमी लेयर लागू करने पर विचार करना चाहिए। इसे लेकर दलित सांसदों ने पीएम से मिलकर अपनी चिंता जताई थी। 9 अगस्त की शाम में कैबिनेट मीटिंग हुई। इसके बाद केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि एनडीए सरकार बीआर अंबेडकर के बनाए गए संविधान से बंधी है। इस संविधान में एससी/एसटी आरक्षण में क्रीमी लेयर का कोई प्रावधान नहीं है। भाजपा के ओडिशा से लोकसभा सांसद रबीन्द्र नारायण बेहरा ने बताया, सभी सासंदों ने एक स्वर से पीएम से मांग की कि सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले को लागू मत करिए। इस पर पीएम ने आश्वस्त किया है कि एससी-एसटी आरक्षण में क्रीमी लेयर को नहीं लाया जाएगा। बेहरा के अनुसार, पीएम ने कहा कि सरकार फैसले का अध्ययन कर रही है।

कोलकाता के हॉस्पिटल में ट्रेनी डॉक्टर से रेप, फिर हत्या

आंख-मुंह, प्राइवेट पार्ट से खून बहा, गर्दन टूटी; ममता बोलीं-दोषी को फांसी दिलाएंगे

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता के सरकारी हॉस्पिटल (आरजी कर मेडिकल कॉलेज) में शुक्रवार को पोस्ट-ग्रेजुएट ट्रेनी महिला डॉक्टर की डेड बॉडी मिली। शुरुआती जांच में पता चला है कि रेप के बाद ट्रेनी डॉक्टर की हत्या की गई है।

महिला के आंख, मुंह और प्राइवेट पार्ट्स से खून बह रहा था। साथ ही उसके पेट, बाएं पैर, गर्दन, दाहिने हाथ, रिंग फिंगर और होठों पर भी चोटें हैं। कोलकाता पुलिस के अनुसार मामला सुसाइड का नहीं है। रेप के बाद हत्या हुई है। ट्रेनी डॉक्टर की गर्दन की हड्डी भी टूटी हुई मिली है। ऐसा लगता है कि गला घोंटकर हत्या की गई है। घटना के बाद मेडिकल स्टूडेंट्स, भाजपा, कांग्रेस और वाम दलों ने अस्पताल के बाहर विरोध-प्रदर्शन किया। पश्चिम बंगाल के भाजपा नेता सुवेंदु अधिकारी ने मामले की सीबीआई जांच कराने की मांग की है। सीएम ममता बनर्जी ने शनिवार को कहा- मामले को फास्ट ट्रैक कोर्ट में भेजा जाएगा। दोषी को फांसी की सजा देने की मांग करेंगे। सीबीआई जांच से कोई ऐतराज नहीं है।

पिता का आरोप-

- बेटी की रेप के बाद हत्या की

ट्रेनी डॉक्टर चेस्ट मेडिसिन डिपार्टमेंट की स्टूडेंट थी। गुरुवार (8 अगस्त) की रात ड्यूटी कर रही थी। पिता का आरोप है कि आरजी कर मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में उनकी बेटी के साथ रेप के बाद हत्या की गई है। अब सच्चाई को छिपाने की कोशिश की जा रही है। आरजी कर मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ संदीन घोष ने कहा- पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही पता चलेगा कि महिला के साथ क्या हुआ। हम जांच को लेकर सभी जरूरी कदम उठा रहे हैं।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 36.3 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 11 अगस्त 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

सैटेलाइट, पावर ग्रिड, स्पेस स्टेशन, सब कुछ खतरे में

आ रहा जीपीएस को भी जाम करने वाला खतरनाक सौर तूफान

वॉशिंगटन (एजेंसी)। नासा समेत दुनियाभर की अंतरिक्ष एजेंसियों ने चेतावनी दी है कि धरती की ओर एक बड़ा सौर तूफान आ रहा है। इस सौर तूफान के कारण सैटेलाइट, पावर ग्रिड और स्पेस स्टेशन को खतरा हो सकता है। नासा के वैज्ञानिकों ने कहा है कि सूर्य से एक खतरनाक सौर तूफान पैदा हुआ है। इस सौर तूफान के बहाव का रुख पृथ्वी की ओर ही है। इस तूफान में मौजूद आवेशित कण काफी मजबूत हैं, जो जीपीएस या रेडियो सिग्नल को ब्लॉक कर सकते हैं और किसी भी इलेक्ट्रिक डिवाइस को बंद कर सकते हैं। इन आवेशित कणों की गति 30 लाख मील प्रति घंटे से भी अधिक है। अंतरिक्ष एजेंसी ने कहा कि सूर्य से उत्सर्जित सामग्री और ऊर्जा के कारण भू-चुंबकीय तूफान पृथ्वी के रास्ते पर हैं। इससे उपग्रह, बिजली ग्रिड और अंतरिक्ष स्टेशन खतरे में हैं। प्रवक्ता के अनुसार, तीन कोरोनल मास इजेक्शन (सीएमई) वर्तमान में पृथ्वी की ओर बढ़ रहे हैं। पहले दो एम-क्लास सौर फ्लेयर्स 7 अगस्त को सूर्य से उत्सर्जित हुए थे। शुरुआती कोरोनल मास इजेक्शन अपेक्षाकृत छोटे थे, लेकिन तीसरा एक्स1.3-क्लास सौर फ्लेयर इनसे कहीं ज्यादा शक्तिशाली है। प्रवक्ता ने कहा कि सूर्य की सतह से एक और एम-क्लास फ्लेयर्स रिलीज किए गए हैं। सूर्य की सतह से प्लाज्मा और चुंबकीय तरंगों के प्रभाव अगले तीन से चार दिनों में पृथ्वी तक पहुंचने की उम्मीद है। जैसे-जैसे सूर्य अपनी गतिविधि के चरम पर पहुंच रहा है, पृथ्वी को सौर तूफानों से संबंधित जोखिमों का भी उतना ही ज्यादा सामना करना पड़ता है। ये सौर तूफान रेडियो ब्लैकआउट का कारण बन सकते हैं, सैटेलाइट, सेलुलर फोन और जीपीएस नेटवर्क को जाम कर सकते हैं। सौर तूफान शब्द का इस्तेमाल सूर्य पर होने वाली कुछ घटनाओं का पृथ्वी पर महसूस किए जाने वाले वायुमंडलीय प्रभावों के लिए किया जाता है।

संक्षिप्त समाचार

मालदीव में पीएम मोदी के मिशन पर जयशंकर

● दोनों देशों के बीच बड़ा समझौता

माले (एजेंसी)। भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर शुक्रवार को तीन दिवसीय यात्रा पर मालदीव पहुंचे। उनकी यात्रा ऐसे समय में हो रही है, जब मालदीव नई दिल्ली के साथ संबंधों को सुधारने की कोशिश कर रहा है। यात्रा के दौरान जयशंकर का ध्यान मोहम्मद मुइज्जू की अगले होने वाली संभावित भारत यात्रा को लेकर तैयारियों पर है। मुइज्जू के राष्ट्रपति बनने के बाद मालदीव में सहायता के लिए तैनात भारतीय सैन्य कर्मियों को वापस बुलाने की मांग पर दोनों देशों के संबंध खराब हो गए।

ब्राजील में बड़ा विमान हादसा, 62 की मौत

आसमान से गिरा प्लेन, आस-पास के घरों को भी नुकसान

ब्रासीलिया (एजेंसी)। ब्राजील में एक बड़ा विमान हादसा देखने को मिला है। यहां साओ पाउलो के बाहरी इलाके में एक विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस विमान में 62 लोग सवार थे। सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबित ब्राजील की नागरिक सुरक्षा ने इसकी पुष्टि की है। यह भी कहा जा रहा है कि विमान क्रैश होने के कारण कई घरों को नुकसान हुआ है। ब्राजील के राष्ट्रपति लूला डी सिल्वा ने कहा है कि ऐसा लगता है कि दुर्घटना में सभी यात्रियों की मौत हो गई है। उन्होंने एक्स पर एक वीडियों में लोगों से एक मिनट का मौन रखने को कहा। उन्होंने एक्स पर कहा, मैं चाहूंगा कि हर कोई खड़ा हो ताकि हम एक मिनट का मौन रख सकें क्योंकि एक विमान क्रैश हो गया है।

गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर की मूर्ति का अनावरण मॉरीशस के राष्ट्रपति ने किया

मॉरीशस में विश्व रंग 2024 का होना एक ऐतिहासिक सांस्कृतिक घटना है : महामहिम राष्ट्रपति पृथ्वीराज सिंह रूपन

मॉरीशस। विश्व रंग 2024 के अंतर्गत रबीन्द्रनाथ टै गोर, संस्थान, मॉरीशस में रबीन्द्रनाथ टैगोर की मूर्ति का अनावरण महामहिम श्री पृथ्वीराज सिंह रूपन जी.सी.एस.के. मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति के करकमलों से किया गया। उल्लेखनीय है की गुरुदेव की मूर्ति की स्थापना श्री संतोष चौबे, निदेशक, विश्व रंग एवं कुलाधिपति, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, (भोपाल, भारत) के द्वारा भेंट स्वरूप मॉरीशस में की गई है।

महामहिम राष्ट्रपति, श्री पृथ्वीराज सिंह रूपन जी.सी.एस.के. मॉरीशस गणराज्य ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि मॉरीशस में 'विश्व रंग' का होना और गुरुदेव की मूर्ति की स्थापना अपने आप में एक ऐतिहासिक घटना है। भारत और मॉरीशस की एक साझा संस्कृति है। विश्व रंग हमारी साझा संस्कृति को ओर अधिक मजबूती प्रदान करेगा। इस अविस्मरणीय कार्य के लिए रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (भारत) के कुलाधिपति संतोष चौबे जी के प्रति मैं बहुत हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

इस अवसर पर महामहिम श्री पृथ्वीराज सिंह रूपन जी.सी.एस.के. मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति द्वारा गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर की चित्रकला प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया गया। गुरुदेव की चित्रकला की यह प्रदर्शनी भी रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (भोपाल, भारत) द्वारा मॉरीशस स्थित रबीन्द्रनाथ टैगोर संस्थान को भेंट की गई।

माननीया उप- प्रधानमंत्री लीलादेवी दुकन जी ने कहा कि बहुत ही गर्व की बात है, कि भारतीय संस्कृति-वैश्विक मंच 'विश्व रंग' टैगोर अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव का भोपाल (भारत) से मॉरीशस की रचनात्मक यात्रा दोनों देशों के साहित्यिक, सांस्कृतिक और भाषा शिक्षण को बढ़ावा देने की दिशा में एक सार्थक कदम है।

इस अवसर पर श्री पृथ्वीराज सिंह रूपन जी.सी.एस.के. मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, माननीया उपप्रधानमंत्री लीलादेवी दुकन और विश्व रंग के निदेशक श्री संतोष चौबे की गरिमामय उपस्थिति में रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (भारत) तथा महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के बीच मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैडिंग पर हस्ताक्षर किये गये। डॉ. विजय सिंह, कुलसचिव, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (भारत) तथा डॉ. राजकुमार रामपरताब, महानिदेशक, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस ने संयुक्त रूप से मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैडिंग पर हस्ताक्षर किये।

इस अवसर पर विश्व रंग की अवधारणा पर संतोष चौबे ने विस्तार से प्रकाश डाला। इन्द्रदत्त राम, अध्यक्ष, महात्मा गांधी संस्थान एवं रबीन्द्रनाथ टैगोर संस्थान, मॉरीशस ने भी अपने विचार व्यक्त किये। धन्यवाद ज्ञापन श्री करमलाल मांतादिन (मॉरीशस) द्वारा किया गया। समारोह का संचालन डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी, कुलाधिपति, स्कोप ग्लोबल स्किल्स विश्वविद्यालय (भारत), एवं श्री विनय उपाध्याय, निदेशक टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र द्वारा किया गया। इस अवसर पर मॉरीशस सरकार के कई गणमान्य मंत्रीगण एवं वरिष्ठ अधिकारियों सहित बड़ी संख्या में हिंदी प्रेमी और साहित्य प्रेमियों ने रचनात्मक भागीदारी की।

जयति चक्रवर्ती ने रबीन्द्र संगीत से बांधा समां

विश्व रंग, मॉरीशस के अवसर पर सुप्रसिद्ध बांग्ला गायिका (कोलकाता, पश्चिम बंगाल) ने रबीन्द्र संगीत के सुमधुर बांग्ला गीतों और उन्हीं पर केन्द्रित हिंदी फिल्मों के गीतों की अद्भुत प्रस्तुतियों से मॉरीशस की ढलती शाम को एक अलग ही शमां बांधा।

दूसरे दिन आयोजित वैचारिक सत्रों की झलकियाँ...

प्रेमचंद सभागार–प्रात- मंगलाचरण में कोलकाता, भारत के चर्चित कलाकार सुब्रतो सेन, नीलांकुश दत्ता और ऋतुपर्णा बैनर्जी ने एकतारा पर रबीन्द्रनाथ टैगोर के संगीत की मधुर धुनों से मंगलमय वातावरण निर्मित कर दिया।

स्मरण- अभिमन्यु अनत– विश्व साहित्य चेतना के रचनाकार विषय पर आयोजित सत्र का संचालन विश्व रंग के सह–निदेशक एवं वरिष्ठ कवि लीलाधर मंडलोई ने किया। वरिष्ठ कवि डॉ. जितेन्द्र श्रीवास्तव (दिल्ली, भारत) ने किया विषय प्रवर्तन। डॉ. वेदप्रकाश सिंह (जापान), डॉ. संयुक्ता भोवन रामसारा (मॉरीशस), और युवा आलोचक अच्युतानंद मिश्र (केरल, भारत) ने अपने विचार व्यक्त किये।।

समानांतर सत्र– अंतरराष्ट्रीय कविता पाठ का सत्र भारत के वरिष्ठ कवि अरुण कमल की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस सत्र में संतोष चौबे, जितेन्द्र श्रीवास्तव, बलराम गुमास्ता, नीलेश रघुवंशी, सविता भार्गव ने कविता पाठ किया। सत्र का संचालन जितेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा किया गया।

अभिमन्यु अनत सभागार–विश्व के देशों में हिंदी- स्थिति और संभावनाएँ (नई पीढ़ी के संदर्भ में) विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ रचनाकार एवं विचारक मनोज श्रीवास्तव द्वारा की गई। इस सत्र में डॉ. आरती लोकेश (यू.ए.ई), डॉ. कृष्ण कुमार झा (मॉरीशस), डॉ. वीर बहादुर महतो (नेपाल) ने विचार व्यक्त किए। डॉ. जवाहर कर्नावट ने सत्र का संचालन किया।

वनमाली सभागार, हिंदी में विज्ञान लेखन–चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता विश्व रंग के निदेशक संतोष चौबे द्वारा की गई। सत्र में बीज वक्तव्य वरिष्ठ विज्ञान लेखक देवेन्द्र मेवाड़ी ने दिया। निस्पर के युवा वैज्ञानिक एवं रचनाकार डॉ. मनीष मोहन गोरे, इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए के सह संपादक एवं युवा कवि मोहन सगोरिया, वरिष्ठ विज्ञान लेखक डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र ने विचार व्यक्त किये।

जम्मू-कश्मीर के कठुआ में फिर दिखे 4 आतंकी

● पुलिस ने जारी किया स्केच, नकद ईनाम की घोषणा

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू और कश्मीर पुलिस ने शनिवार को चार आतंकवादियों के स्केच जारी किए, जिन्हें कठुआ जिले के ऊंचे इलाकों में ढोक (मिट्टी के घरों) में देखा गया था। पुलिस ने उनके बारे में विश्वसनीय जानकारी देने वाले को 20 लाख रुपये का नकद इनाम देने की घोषणा की है। कठुआ जिले में 8 जुलाई को माचेडी के सुदूर वन क्षेत्र में सेना के गश्ती दल पर आतंकवादियों द्वारा घातक हमला किया गया था। इस हमले में एक जूनियर कमीशंड अधिकारी (जेसीओ) सहित पांच सैनिक शहीद हो गए थे। व्यापक तलाशी अभियान के बावजूद, पाकिस्तान स्थित जैश-ए-मोहम्मद संगठन से जुड़े कश्मीर टाइगर्स के आतंकवादी अभी तक पकड़ में नहीं आ पाए हैं। वे पाकिस्तान से भारत में घुसपैठ कर आए थे।

हाईकोर्ट बोला-यौन उत्पीड़न महिला-पुरुष दोनों कर सकते हैं

ऐसे मामलों में जेंडर कोई ढाल नहीं हैं; महिला आरोपियों पर केस चलाया जाना चाहिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने शनिवार को पॉक्सो एक्ट के एक मामले में सुनवाई की। जस्टिस जयराम भंभानी ने कहा कि पॉक्सो एक्ट के तहत पेनिट्रेटिव यौन हमले और गंभीर पेनेट्रेटिव यौन हमला (जबरन किसी चीज से बच्चों के निजी अंगों से छेड़छाड़) केस महिलाओं के खिलाफ भी चलाया जा सकता है। ऐसे मामलों में जेंडर कोई ढाल नहीं हैं।

कोर्ट की टिप्पणी एक महिला की दाखिल याचिका पर आई है। उसका तर्क है कि पॉक्सो एक्ट की धारा 3 में पेनिट्रेटिव यौन हमला और धारा 5 में गंभीर पेनिट्रेटिव यौन हमला का केस किसी महिला पर दर्ज नहीं हो सकता। क्योंकि इनकी डेफिनेशन से पता चलता है कि इसमें केवल सर्वनाम 'वह' का उपयोग किया गया है। जो कि पुरुष को दर्शाता है, महिला को नहीं। महिला पर साल 2018 में केस दर्ज हुआ था। मार्च 2024 में ट्रायल कोर्ट ने उसके खिलाफ पॉक्सो एक्ट के तहत आरोप तय किए थे। इसके बाद महिला ने हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी।

पॉक्सो के प्रावधानों से पता चलता है कि पोक्सो अधिनियम की धारा 3 में प्रयुक्त शब्द 'वह' को ये अर्थ नहीं दिया जा सकता कि यह केवल पुरुष के लिए है। इसके दायरे में लिंग भेद के बिना कोई भी अपराधी (महिला और पुरुष दोनों) शामिल होना चाहिए।

जगदीप धनखड़ को हटवाने की तैयारी में जुटा विपक्ष

● उपराष्ट्रपति के खिलाफ प्रस्ताव पर इंडिया ब्लॉक के 87 सांसदों के हस्ताक्षर

नई दिल्ली (एजेंसी)। राज्यसभा के सभापति और विपक्षी सदस्यों के बीच अनबन 10 अगस्त को टकराव में बदल गई। नौबत इस हद तक पहुंच गई कि विपक्षी दलों ने सभापति जगदीप धनखड़ को पद से हटाने के लिए प्रस्ताव लाने की तैयारी कर ली है। प्रस्ताव औपचारिक रूप से आता है तो संसदीय इतिहास में पहली बार होगा कि उपराष्ट्रपति को हटाने की पहल विपक्ष कर रहा होगा। सूत्रों के अनुसार, राज्यसभा में सपा सांसद जया अमिताभ बच्चन और जगदीप धनखड़ के बीच हुई बहस के बाद माहौल बिगड़ गया।

झारखंड के पूर्व मंत्री आलमगीर को झटका

● कोर्ट ने नहीं सुनी अर्जी, खारिज की जमानत याचिका

रांची (एजेंसी)। झारखंड के पूर्व मंत्री और कांग्रेस विधायक आलमगीर आलम को झटका देते हुए कोर्ट ने शुक्रवार को उनकी जमानत याचिका को खारिज कर दिया। विशेष न्यायाधीश पीके शर्मा की अदालत ने आलम की जमानत अर्जी पर सुनवाई करते हुए कहा कि वह एक प्रभावशाली व्यक्ति होने के कारण सबूतों को छिपा सकते हैं और गवाहों को प्रभावित कर सकते हैं। न्यायाधीश प्रभात कुमार शर्मा ने कहा कि मनी लॉन्ड्रिंग का अपराध राष्ट्रीय हित के लिए आर्थिक खतरा है और यह अपराधियों द्वारा उचित साजिश, जानबूझकर डिजाइन और व्यक्तिगत

शेख हसीना के बाद बांग्लादेश में चीफ जस्टिस का इस्तीफा

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस ओबैदुल हसन ने इस्तीफा दे दिया है। उनके इस्तीफे की मांग को लेकर प्रदर्शनकारी छात्रों ने शनिवार सुबह सुप्रीम कोर्ट को घेर लिया था। प्रदर्शनकारी बड़ी तादाद में वहां इकट्ठा हुए थे। छात्रों ने कहा, अगर जजों ने इस्तीफे नहीं दिए तो हसीना की तरह उन्हें भी कुर्सी से खींचकर उतार देंगे।÷ प्रदर्शनकारी छात्रों ने आरोप लगाए थे कि सुप्रीम कोर्ट के जज हसीना से मिले हुए हैं। इन जजों ने अंतरिम सरकार से पूछे बिना ही शनिवार को पूरी कोर्ट की एक बैठक बुलाई। इस मीटिंग के चलते प्रदर्शनकारियों ने एक घंटे के भीतर जजों से इस्तीफा देने की मांग की। हसन को पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना का करीबी भी माना जाता है। बांग्लादेश में राजनीतिक उथल-पुथल के बीच देश के मुख्य न्यायाधीश के इस्तीफे की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन तेज हो गया है। शनिवार को ढाका में हाई कोर्ट बिल्डिंग के सामने सैकड़ों प्रदर्शनकारी एकत्र हुए, उन्होंने चीफ जस्टिस समेत सात जजों के इस्तीफे की मांग की। प्रदर्शनकारी शांतिपूर्ण धरने पर बैठे हुए थे।

९०० किमी की 8 नई रेल लाइन बिछाने की तैयारी

मोदी सरकार ने दी मंजूरी, बिहार को मिली बड़ी सौगात

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने करीब 900 किलोमीटर की 8 नई रेलवे लाइन बिछाने की एक महत्वाकांक्षी योजना को आज मंजूरी दे दी है जो पूर्वी भारत में आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने एवं रोजगार सृजित करने में महत्वपूर्ण योगदान देंगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने रेल मंत्रालय की इन आठ परियोजनाओं को मंजूरी दी जिनकी कुल अनुमानित लागत 24,657 करोड़ रुपए है। ये परियोजनाएं पांच से छह साल में पूरी करने का लक्ष्य है। रेल, सूचना प्रसारण एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने एक संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि नई लाइन के प्रस्ताव सीधी कनेक्टिविटी प्रदान करेंगे और गतिशीलता में सुधार करेंगे, जिससे भारतीय रेलवे के लिए बेहतर दक्षता और सेवा विश्वसनीयता मिलेगी। ये परियोजनाएं प्रधानमंत्री मोदी के नए भारत के दृष्टिकोण के अनुरूप हैं जो क्षेत्र में व्यापक विकास के माध्यम से क्षेत्र के लोगों को आत्मनिर्भर बनाएगी जिससे उनके रोजगार/स्वरोजगार के अवसर बढ़ेंगे। उन्होंने कहा कि ये परियोजनाएं मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी के लिए पीएम-गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान का परिणाम हैं जो एकीकृत योजना के माध्यम से संभव हुई हैं और लोगों, वस्तुओं और सेवाओं की आवाजाही के लिए निर्बाध कनेक्टिविटी प्रदान करेंगी। वैष्णव ने कहा कि सात राज्यों यानी ओडिशा, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, झारखंड, बिहार, तेलंगाना और पश्चिम बंगाल के 14 जिलों को कवर करने वाली आठ परियोजनाएं भारतीय रेलवे के मौजूदा नेटवर्क को 900 किलोमीटर तक बढ़ा देंगी।

इन परियोजनाओं के साथ 64 नए स्टेशनों का निर्माण किया जाएगा, जो लगभग छह (6) आकांक्षी जिलों (पूर्वी सिंहभूम, भदाद्रीकोठागुडेम, मलकानगिरी, कालाहांडी, नबरंगपुर, रायगढ़ा) तथा 510 गांव और करीब 40 लाख आबादी को कनेक्टिविटी देगी। रेल मंत्री ने कहा कि यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल अजंता गुफाएं भारतीय रेलवे नेटवर्क से जुड़ेंगी, जिससे बड़ी संख्या में पर्यटकों को सुविधा मिलेगी। ये कृषि उत्पाद, उर्वरक, कोयला, लौह अयस्क, स्टील, सीमेंट, बॉक्साइट, चूना पत्थर, एल्यूमीनियम पाउडर, ग्रेनाइट, गिट्टी, कंटेनर आदि जैसी वस्तुओं के परिवहन के लिए आवश्यक मार्ग हैं। क्षमता वृद्धि कार्यों के परिणामस्वरूप अतिरिक्त माल ढुलाई होगी।

परिक्रमा

मोदी ने आदिवासी-दलितों को किया चिन्तामुक्त

अरुण पटेल

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।
संपर्क-
09425010804
07999673990

भारत की सर्वोच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक निर्णय में केन्द्र व राज्य सरकारों को यह सुझाव दे दिया था कि यदि वे चाहें तो अपने स्तर पर अनुसूचित जाति यानी दलितों और आदिम जाति कल्याण विभाग में यानी आदिवासियों में क्रीमीलेयर लागू कर सकती हैं। लेकिन इससे आदिवासी सांसद चिंतित हो गये थे और संसद भवन में इन वर्गों के 100 सांसदों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिलकर अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के लिए जातियों के आरक्षण में क्रीमीलेयर लागू नहीं करने की मांग की थी। मोदी ने पहले तो उनसे इस मुद्दे पर चर्चा की और जो सुझाव दिया था उसको त्वरित गति से पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ते हुए केंद्रीय मंत्रिमंडल में क्रीमीलेयर न लागू करने का निर्णय कर लिया। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने जहां एक ओर कर्नाटक राज्य में उद्योगपतियों को आकर्षित करने के लिए आमंत्रित किया वहीं दूसरी ओर लाड़ली बहनों और महिलाओं का दिल जीतने का एक प्रकार से अभियान भी छेड़ दिया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी भी इन दिनों फुलफार्म में हैं और सरकार को अपनी तरफ से आइना दिखाने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस बी.आर. गवई ने इस संबंध में दिये गये एक फैसले में सुझाव देते हुए कहा था कि एससी-एसटी वर्ग में क्रीमीलेयर लागू करने पर विचार करना चाहिये और इसी को लेकर इन वर्गों के सांसदों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एक ज्ञापन सौपते हुए इन वर्गों की चिन्ता से अवगत कराया था। 9 अगस्त 2024 की शाम को हुई केबिनेट बैठक में इस मुद्दे पर चर्चा हुई, रात्रि में सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बैठक के बाद कहा कि एससी-एसटी के लिए आरक्षण संविधान के अनुसार ही होना चाहिये और संविधान में किसी क्रीमीलेयर का प्रावधान नहीं है। वहीं दूसरी ओर भाजपा के उड़ीसा से लोकसभा सदस्य रबिन्द्र नारायण बेहरा ने बताया था कि प्रधानमंत्री से मिलने वाले सभी सांसदों ने एक स्वर से यही मांग की थी कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले को लागू मत करिये, इस पर प्रधानमंत्री ने आश्वस्त किया था कि इन वर्गों के आरक्षण में क्रीमीलेयर को नहीं लाया जायेगा। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है बल्कि इससे पूर्व भी सरकारें सुप्रीम कोर्ट की मंशा से अलग फैसले करती रही हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरु जब देश के प्रधानमंत्री थे उस समय सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया था कि उम्मीदवारों को धर्म या जाति के आधार पर सरकार एडमीशन में सीटें आरक्षित नहीं कर सकती, उसी समय सरकार ने संविधान में पहला संशोधन किया और आरक्षण का हक दिया। इंदिरा गांधी सरकार ने भी जब उनका चुनाव 1975 में इलाहाबाद हाईकोर्ट द्वारा शून्य घोषित कर दिया गया और धांधली का दोषी पाया तो सरकार ने संविधान में संशोधन किया कि राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और लोकसभा स्पीकर के चुनाव को किसी अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती। हालांकि बाद में सुप्रीम कोर्ट ने ही

इसे अवैध करार देकर रद्द कर दिया। मार्च 2018 में सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया था कि एससी-एसटी एट्रोसिटी एक्ट 1989 में सरकारी अफसरों को गिरफ्तार करने से पहले अनुमति लेनी होगी और जांच किये बगैर एफआईआर भी दर्ज नहीं होगी, इस पर सरकार ने प्रावधान किया कि बिना अनुमति के गिरफ्तारी हो सकती है। भाजपा की केन्द्र सरकार ने स्पष्ट कर दिया कि वह संविधान और डॉ. बी.आर आम्बेडकर की मूल भावना के साथ है और संविधान में इन वर्गों के आरक्षण में क्रीमीलेयर का कोई प्रावधान नहीं होगा। संविधान पीठ ने पिछले दिनों आरक्षण में कोटे पर विस्तृत निर्णय देते हुए यह भी सुझाव दिया था कि राज्य सरकारें एससी-एसटी के आरक्षण में क्रीमीलेयर को अलग कर सकती हैं ताकि आरक्षण के लाभ से वंचित रह गये कमजोर तबके को इसका पूरा फायदा मिल सके।

आदिवासी इस देश के मूल निवासी

मध्यप्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा है कि आदिवासी इस देश के मूल निवासी हैं और भाजपा उनसे यह दर्जा छीनना चाहती है। भारत की आधारभूत संरचना में हमारे आदिवासी भाई-बहनों का महान योगदान रहा है। आसमान छूती इमारतें, बड़-बड़ी सिंचाई परियोजनाओं की बुनियाद में आदिवासी माताओं-बहनों की श्रमशक्ति और खून-पसीना बहा है। सरकार द्वारा इनकी सामाजिक न्याय और भागीदारी को अनदेखा करना दुर्भाग्यपूर्ण है। पटवारी ने कहा कि आदिवासी दिवस और मूल निवासी दिवस दोनों पर हमारी शुभकामनाएं आदिवासी भाइयों के साथ हैं। यही कारण है कि कमलनाथ सरकार ने आदिवासी दिवस पर अवकाश घोषित कर आदिवासी मूल निवासी दिवस मनाना शुरु किया था। आदिवासियों के लिये जल-जंगल-जमीन की योजना, कर्ज से मुक्ति योजना जैसी तमाम योजनायें शुरु की थीं। आदिवासी विरोधी भाजपा सरकार ने उनका यह अधिकार छीनकर आदिवासी दिवस पर अवकाश को समाप्त कर दिया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी भाजपा की आदिवासी विरोधी मानसिकता का पुरजोर विरोध करती है।

फिजूलखर्ची रोकने चलाएं अभियान

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश की महिला सरपंचों से आग्रह किया है कि वे फिजूलखर्ची रोकने के लिए अभियान चलायें और शादि व मृत्यु पर फिजूल खर्च रोकने का प्रयास करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि रक्षाबंधन पर सभी बहनें परिवारों में ऐसे खर्चों को कम करने का संकल्प लें। तेरहवीं और मृत्युभोज से बचा जाये। विवाह भी सादगीपूर्ण तरीके से किये जायें। मैंने खुद बेटे की शादी में 100 लोग ही बुलाये। उल्लेखनीय है कि राजस्थान के पुष्कर में 24 फरवरी को मुख्यमंत्री के बेटे डॉ. वैभव का विवाह समारोह हुआ था। मेंहदी और हल्दी सहित सभी रस्मों में परिवार के निकट संबंधी ही शामिल हुए थे। शादी-विवाह, तेरहवीं में कई बार लोग कर्ज लेकर या संपत्ति बेचकर भी पैसा लगाते हैं, इससे कर्जदार हो जाते हैं। लोगों को जागरुक करने की आवष्यकता है। ऐसी गतिविधियों को हतोत्साहित कर सामूहिक विवाद से जमा पूंजी बचाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि परिवार के संसाधनों का उपयोग बच्चों की पढ़ाई तथा परिवार की बेहतरी के लिए हो। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मुख्यमंत्री निवास में रानी दुर्गावती महिला सरपंच सम्मेलन और रक्षाबंधन कार्यक्रम पर बहनों को सम्बोधित करते हुए यह बात कही। इस अवसर पर मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित कार्यक्रम में बहनों ने राखी बांधकर मुख्यमंत्री का मुंह भी मीठा कराया।

और यह भी

मुख्यमंत्री ने पुनः दोहराया है कि राज्य की कोई योजना बंद नहीं होगी। संकल्प-पत्र के सभी वायदे पूरे होंगे। घर-घर रसोई गैस की सुविधा देने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री उज्जवला गैस कनेक्शन प्रदान किये। राज्य सरकार लाड़ली बहनों और उज्जवला कनेक्शन महिलाओं को 450 रुपये में गैस सिलेंडर देगी। उन्होंने कहा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से ''हर घर तिरंगा अभियान'' आरंभ हो रहा है। सरपंच यह सुनिश्चित करें कि सभी घरों पर तिरंगा लहराया जाए, यह स्वतंत्रता सेनानियों और क्रांतिकारियों के योगदान के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

ससुराल ने करोड़ों की संपत्ति हड़पी

अस्पताल संचालक व 11 लोगों की गिरफ्तारी करने पहुंची नोएडा पुलिस

इंदौर (एजेंसी)। एक निजी हॉस्पिटल के संचालक और उनके परिवार के 11 लोगों पर दर्ज धोखाधड़ी के प्रकरण में नोएडा पुलिस इंदौर आई। बताते हैं इनकी बहू ने नोएडा पुलिस को धोखाधड़ी का केस दर्ज करवाया है। आरोप है, पति की संदिग्ध मौत के बाद ससुराल वालों ने साइन करवाकर उनकी करोड़ों की संपत्ति हड़प ली।पुलिस के मुताबिक डॉ. निधि पति रितेश बैस (धाकरे) निवासी गौतम बुद्ध नगर, नोएडा की रिपोर्ट पर सुशीलचंद्र बैस, सास सुनंदा बैस, रश्मि, पद्मिनी भाटिया, डॉ. राधिका, डॉ. कुणाल गांवड़, डॉ. अनिल बंडी, डॉ. कुसुम (बड़ी सास), चाची सास निर्मल, मामा ससुर अजित सिंह तंवर और समीर चतुर्वेदी पड़ोसी पर 22 जनवरी 2018 में कूटरचित दस्तावेजों से करोड़ों की संपति की धोखाधड़ी का दर्ज किया था। बताते हैं आरोपियों में अनिल बंडी ग्रेटर कैलाश हॉस्पिटल के मालिक हैं, इनमें से कोई नहीं मिला।

22 साल पहले शादी हुई- डॉ. निधि ने बताया 2002 में उनकी शादी डॉ. रितेश बैस ओल्ड पलासिया से हुई थी। 2017 में रितेश की संदेहास्पद मौत हो गई। ससुराल वालों ने मुझे 3 दिन बाद सूचना दी। दुख की घड़ी में ही एनओसी के नाम पर मुझसे कई दस्तावेजों पर साइन करवा लिए। इसी का उपयोग कर 80 बीघा जमीन, सेविंग के 50 लाख रुपए, एलआईसी पॉलिसियां व म्यूचल फंड सहित करोड़ों की संपत्ति से मुझे बेदखल कर दिया।

खसरा, नक्शा, नामांतरण आदेश ऑनलाइन मिलेंगे

इंदौर (एजेंसी)। जमीन की खरीदी-बिक्री के बाद नामांतरण की प्रक्रिया में लगने वाला महीनों का समय अब सिर्फ 2 से 3 सप्ताह का रह जाएगा। जमीन खरीदने के बाद तहसील कार्यालय के चक्कर नहीं लगाना पड़ेंगे। जरूरी दस्तावेज, खसरा, नक्शा ऑनलाइन एसएमएस, ईमेल और वाट्सएप पर घर बैठे मिलेंगे। पहले केवल खसरा क्रय-विक्रय की प्रक्रिया ऑनलाइन थी। अब आंशिक खसरा क्रय-विक्रय भी ऑनलाइन प्रक्रिया से जोड़ दिए हैं। यह संभव हुआ है साइबर तहसील 2.0 की शुरुआत से। प्रमुख राजस्व आयुक्त अनुभा श्रीवास्तव ने बताया कि एक साल में अमूमन संपूर्ण खसरे के क्रय-विक्रय के लगभग 2 लाख और आंशिक खसरा क्रय-विक्रय के लगभग 6 लाख प्रकरणों का नामांतरण होता है। आंशिक खसरा क्रय-विक्रय के प्रकरणों का भी ऑनलाइन नामांतरण होने से हर साल लगभग 8 लाख से अधिक नागरिकों को इससे लाभ होगा। साइबर तहसील 2.0 में संपदा से प्राप्त अविवादित आंशिक खसरों के क्रय-विक्रय आधारित नामांतरण प्रकरणों में क्षेत्रीय स्तर पर एंड-टू-एंड ऑनलाइन सिस्टम के माध्यम से तत्काल निराकरण की व्यवस्था की गई है। इस व्यवस्था में नामांतरण के बाद नामांतरण आदेश और खसरा नक्शा की अद्यतन प्रति ऑनलाइन इमेल और वाट्सएप के माध्यम से घर बैठे नागरिकों को मिलेगी।

इंदौर में एक ही दिन में पांच मातृशक्ति का महादान

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में एक ही दिन में पांच मातृशक्ति ने महादान किया। इसमें नेत्रदान, दो त्वचादान और एक संपूर्ण देहदान शामिल है। इससे अनेक लोगों को जीवनदान मिलेगा और दस लोगों का जीवन रोशन हो सकेगा। कहा जा सकता है कि मातृशक्ति जीते जी तो जीवन देती ही हैं किंतु इस दुनिया से जाने के बाद भी लोगों को नया जीवन देने का काम कर रही हैं।मुस्कान ग्रुप पारमार्थिक ट्रस्ट के जीतू बगानी और संदीपन आर्य ने बताया कि हेमा वतनानी, कल्पना जैन, नीलम अभीचंदानी, रेखा बदलानी, ललिता देवी बंसल के नेत्रदान शंकर आई बैंक और एमवाय आई बैंक में किए गए। त्वचादान चोइथराम स्किन बैंक के सहयोग से किया गया। इसी तरह ललिता बंसल का देहदान सेम्स मेडिकल कॉलेज भोपाल में शोध कार्य हेतु दिया गया। इस महादान के कार्य में समन्वय सेवा डॉ. वाएएन गोयल, विजयंत स्काउट के अजय गुप्ता, मुस्कान सेवादार नानक बदलनी, समाजसेवी मुस्कान सेवादार नरेश फुंदवानी ने दी। फुंदवानी ने शव पेटिका भी उपलब्ध कराई।

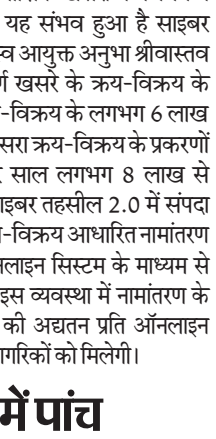

निगम की बकाया जलकर स्कीम में 50 प्रतिशत छूट पर सवाल

इंदौर महापौर को दिया लीगल नोटिस, 5 दिन में जमा हुए 3 करोड़ 65 लाख

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर नगर निगम की बकाया जलकर राशि की वसूली के लिए लाई गई स्कीम पर सवाल खड़े हो गए हैं। बकाया राशि भरने पर 50 पर्सेंट की छूट दी जा रही है। मामले में लीगल नोटिस भेजा है। जिसमें जिम्मेदारों से पूछा है कि ये छूट किस नियम के तहत दी गई है। मध्यप्रदेश नगर निगम अधिनियम 1956 में ऐसा प्रावधान नहीं है। फैसले वापस लिया जाए। जानिए क्या है पूरा मामला।

25 अगस्त तक लागू है स्कीम

शहर में 1 लाख 88 हजार कनेक्शन का कुल करीब 500 करोड़ रुपए जलकर का बकाया है। ये अमाउंट वित्तीय वर्ष 2022-23 तक का है। इसकी वसूली के लिए महापौर पुष्यमित्र भार्गव एक स्कीम लेकर आए है। जिसके तहत बकाया जलकर राशि भरने पर 50 पर्सेंट की छूट मिलेगी। यानी किसी का यदि 1 लाख रुपए बकाया है तो उसे सिर्फ 50 हजार ही भरने पड़ेंगे। स्कीम 5 से 25 अगस्त तक लागू की गई है। शुक्रवार शाम तक 4 हजार 15 लोगों ने जलकर जमा करवाया है। निगम के खजाने में

इससे 3 करोड़ 65 लाख रुपए जमा हुए हैं। नगर निगम ने इस स्कीम के प्रमोशन के लिए शहर भर में जगह-जगह पोस्टर लगाए हैं। वसूली के लिए शिविर भी लगाए जा रहे हैं और पार्षदों को भी वार्ड के हिसाब से बकायादारों की लिस्ट सौंपी गई है। एडवोकेट अमित उपाध्याय की ओर से प्रमुख सचिव नगरीय प्रशासन विभाग, महापौर पुष्यमित्र भार्गव और निगमायुक्त शिवम वर्मा को नोटिस भेजा गया है।

इसलिए भेजा लीगल नोटिस

स्कीम सामने आने के बाद जो नियमित रूप से जलकर जमा कर रहे हैं, वो अपने आप को ठगा-सा महसूस करने लगे हैं। इसलिए मामले में एडवोकेट अमित उपाध्याय की ओर से प्रमुख सचिव नगरीय प्रशासन विभाग, महापौर पुष्यमित्र भार्गव और निगमायुक्त शिवम वर्मा को नोटिस भेजा गया है। जिसमें पूछा है कि ये छूट किस नियम के तहत दी गई है। मध्यप्रदेश नगर निगम अधिनियम में इतनी छूट देने की व्यवस्था नहीं है। अधिनियम की धारा 132,133,134 में रिकवरी के तरीके है लेकिन 50 पर्सेंट की छूट देना ठीक नहीं है। नियमित जलकर भरने वाले के साथ धोखाधड़ी है। इसलिए फैसला वापस लिया जाए।

शासन को प्रस्ताव भेज लागू की स्कीम

मामले में मेयर इन काउंसिल से प्रस्ताव पास कराने के बाद स्कीम लाई गई है। निगम की तरफ से शासन को भी प्रस्ताव भेजा गया था। वहां से जो संशोधन बताए गए उसके बाद ही इसे लागू किया गया है। मध्यप्रदेश नगर निगम अधिनियम की धारा 187 का हवाला निगम अधिकारियों द्वारा दिया जा रहा है। जिसके तहत बकाया राशि को इस तरह वसूलने का अधिकार है। लेकिन 50 पर्सेंट की छूट दी जा सकती है इस पर सवाल खड़े हो रहे हैं। यदि ये छूट 5 से 20 पर्सेंट की होती तो शायद इतने इस पर सवाल खड़े नहीं होते।

इंदौर के डॉक्टरों ने बिना सर्जरी बदला हार्ट का वाल्व

8 साल पहले हुई बाइपास सर्जरी से वाल्व में ब्लीडिंग, नई तकनीक से हुआ इलाज

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में एक बुजुर्ग का बिना सर्जरी के हार्ट का वाल्व बदला गया है। उनकी आठ साल पहले बाइपास सर्जरी हुई थी। तब माइट्रल वॉल्व (बायां) भी बदला गया था।

पिछले चार माह से उन्हें सांस लेने में तकलीफ, घबराहट, थकान हो रही थी। जांच में पता चला कि वाल्व से ब्लीडिंग हो रही है। डॉक्टरों ने उन्हें सर्जरी और नई तकनीक कैथेटर (तार) से वॉल्व बदलने के विकल्प बताए। ऐसी स्थिति में बुजुर्ग के बेटे ने इस तकनीक की पूरी जानकारी निकाली। इसके बाद बाहर के भी एक्सपर्ट्स से सारी स्थिति समझी। फिर नई तकनीक से पिता का वाल्व बदलवाया। नई तकनीक से वाल्व बदलने का यह मप्र का पहला केस था। लेदर वाल्व भी भारतीय कंपनी का ही लगाया गया है। मामला इंदौर निवासी 72 वर्षीय रमेशचंद्र शर्मा का है। 25 जुलाई को उनका नई तकनीक कैथेटर (तार) से वाल्व बदला गया है। बेटे दीपक ने बताया कि जब दोनों ही विकल्पों पर एक्सपर्ट्स से बात की तो नई तकनीक से वाल्व बदलने का तरीका ज्यादा बेहतर लगा। इसके लिए जब रिसर्च किया तो पता चला कि इस तकनीक का उपयोग साउथ, दिल्ली और गुजरात में होता है। फिर भी हमने इंदौर को ही चुना। दरअसल इसी हॉस्पिटल में उनका बाइपास भी हो चुका है जिससे पिता को नई जिंदगी मिली थी। इस बीच परिवार ने एक बड़े सेंटर से भी जानकारी जुटाई और इंदौर के डॉक्टरों को सहमति दी।

पत्नी की मोबाइल पर बातचीत को धोखे से किया रिकॉर्ड

इंदौर हाई कोर्ट ने इसे बतौर सबूत पेश करने की नहीं दी अनुमति

इंदौर (एजेंसी)। हाई कोर्ट की इंदौर खंडपीठ ने वैवाहिक विवाद के एक मामले में महत्वपूर्ण फैसला दिया है। हाई कोर्ट ने कहा है कि धोखे से, सामने वाले व्यक्ति को बिना बताए उसकी मोबाइल पर की गई बातचीत को रिकॉर्ड कर सबूत के रूप में पेश किए जाने की अनुमति नहीं दी जा सकती। दरअसल, दंपती में विवाद का मामला फैमिली कोर्ट में चल रहा है। पति ने पत्नी की मोबाइल पर की गई बातचीत की रिकॉर्डिंग को कोर्ट में साक्ष्य के रूप में पेश किए जाने की अर्जी दायर की थी, जिसे कोर्ट ने स्वीकार कर लिया था। इस आदेश के खिलाफ हाई कोर्ट में अपील दायर की गई थी। हाई कोर्ट ने निचली कोर्ट में रिकॉर्डिंग को सबूत के रूप में पेश किए जाने के आदेश को रद्द कर दिया।

हाई कोर्ट ने माना- अनधिकृत रिकॉर्डिंग गोपनीयता अधिकारों का उल्लंघन है- जस्टिस गजेंद्र सिंह ने अतिरिक्त प्रधान न्यायाधीश, पारिवारिक न्यायालय, इंदौर के पिछले आदेश को रद्द कर दिया। यह माना गया कि अनधिकृत रिकॉर्डिंग गोपनीयता अधिकारों का उल्लंघन करती है। याचिकाकर्ता और प्रतिवादी के बीच 24 फरवरी 2016 को इंदौर में शादी हुई थी। इसके बाद से ही दोनों के बीच विवाद होने लगा। याचिकाकर्ता ने सीआरपीसी की धारा 125 के तहत अंतरिम रखरखाव की मांग करते हुए याचिका दायर की।

प्रतिवादी ने सिविल प्रक्रिया संहिता (सी.पी.सी.) के आदेश 17 नियम 1 के तहत एक आवेदन दायर किया, जिसमें अदालत से याचिकाकर्ता द्वारा कथित व्यभिचार के सबूत के रूप में एक इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज, विशेष रूप से रिकॉर्ड की गई बातचीत वाली एक कॉम्पैक्ट डिस्क को रिकॉर्ड पर लेने का अनुरोध किया गया। याचिकाकर्ता ने मौलिक अधिकारों के उल्लंघन और निजता के उल्लंघन सहित कई आधारों पर रिकॉर्ड की गई बातचीत की स्वीकार्यता को चुनौती दी थी। हाई कोर्ट ने याचिका स्वीकार करते हुए उसे रिकॉर्ड पर लेने के आदेश को निरस्त कर दिया।

इंदौर में पिछले साल की तर्ज पर अगस्त का मौसम

10 दिनों में सिर्फ 2 इंच बारिश, पिछले साल पूरे माह में हुई थी ढाई इंच

इंदौर (एजेंसी)। अगस्त का दूसरा हफ्ता शुरू हो गया है लेकिन इंदौर में अब तक झड़ी वाला मौसम नहीं बन सका। इस बार माह की स्थिति पिछले साल जैसी है। 2023 में सिर्फ 2.7 इंच ही बारिश हुई थी जबकि अगस्त की औसतन बारिश 13 इंच है। इस लिहाज से इस माह का कोटा पूरा करने के लिए 11 इंच बारिश चाहिए जबकि अभी 20 दिन बाकी हैं। शनिवार सुबह से बादल छाए हुए हैं। मौसम वैज्ञानिकों ने एक-दो दिन हल्की बारिश के आसार जताए हैं। फिर 15 अगस्त तक मौसम खुला रहेगा। दरअसल इस बार जुलाई में भी कोटे से ढाई इंच कम बारिश हुई है। पिछले साल इस दौरान 23 इंच बारिश हुई थी। इसमें से 18 इंच बारिश

जुलाई माह में हुई थी। इस बार जुलाई में 10 इंच बारिश हुई है। इस तरह से पिछले साल की तुलना में 7 इंच बारिश कम हुई है। हालांकि मौसम वैज्ञानिकों ने इस बार अगस्त और सितम्बर के आखिरी दिनों में अच्छी बारिश के संकेत दिए हैं।सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन के मुताबिक अभी तीन साइक्लोनिक सर्कुलेशन और एक मानसून ट्रफ लाइन एक्टिव हैं। मानसून ट्रफ एमपी के कई जिलों से होकर गुजर रही है।

जल जीवन मिशन की संभागीय समीक्षा बैठक

सभी जिलों में जल एवं स्वच्छता समिति की बैठकें की जाएं, इस योजना को लेकर फैली भ्रांतियों को दूर करें

इंदौर (एजेंसी)। जल जीवन मिशन में सिंगल विलेज एवं मल्टी विलेज योजनाओं व कार्यों के क्रियान्वयन की पूरी प्रक्रिया की जानकारी क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों को दें। प्रत्येक जिले में 15 अगस्त से पूर्व जिला जल एवं स्वच्छता समिति की बैठक आयोजित हो। जिले में जल जीवन मिशन के तहत हो रहे कार्यों की जानकारी समिति पदाधिकारियों एवं सदस्यों को भी बताएं। ये निर्देश शुक्रवार को इंदौर में हुई जल जीवन मिशन की समीक्षा बैठक में विभाग के सचिव पी. नरहरि ने दिए। उन्होंने कहा किसी भी स्तर पर संवाद की कमी न हो।जल जीवन मिशन के कामों से जुड़ी भ्रांतियों को दूर करने के लिए विशेष प्रयास करें। मैदानी स्तर पर योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन के संबंध में ग्रामीणों को जागरूक किया जाए। जिला योजना समिति की बैठक में प्रमुखता से जल जीवन मिशन के तहत स्वीकृत कार्यों तथा अब तक की प्रगति के बारे में बताया जाए। इंदौर जिला एफएचटीसी के लक्ष्यों को शीघ्र पूरा करते हुए जिले को सम्मान दिलाए जाने के लिए भी विशेष प्रयास करें।

हर घर जल का काम पूरा हो तो उत्सव के आयोजन भी करें

नरहरि ने कहा जल जीवन मिशन के तहत हर घर

नल से जल की अवधारणा अनुसार मानकों को पूरा होने के बाद उत्सवी वातावरण में कार्यक्रम का आयोजन किया जाए। इसमें क्षेत्रीय जनप्रतिनिधि, गणमान्यजन, अधिकारी-कर्मचारी, ग्रामीण जनों की सहभागिता हो।

बड़वानी, झाबुआ, खंडवा जिले के ईई को एक सप्ताह में काम पूरे करने के निर्देश दिए

सभी सीईओ जिला पंचायत प्रति सप्ताह जल जीवन मिशन के कार्यों की समीक्षा करें। जलस्रोतों की जियो टैगिंग की समीक्षा करते हुए बड़वानी, झाबुआ, खंडवा जिले के ईई को एक सप्ताह में 100 प्रतिशत काम करने के निर्देश दिए। प्रबंध संचालक जल निगम केपीएस चौधरी ने जल निगम के माध्यम से हो रहे कार्यों की जानकारी दी।

दृष्टिकोण

सपना सीपी साहू 'स्वप्निल'

फोगाट 50 किलोग्राम वजन में खेलने वाली खिलाड़ी नहीं

हमारे देश के प्रधानमंत्री मोदी जी ने सबसे पहले ट्वीट कर महिला पहलवान विनेश फोगाट को हौसला दिया बल्कि पीटी उषा जी को विरोध दर्ज कराने को भी कहा पर देखते है कि ओलम्पिक आयोजक नियमों के तहत क्या फैसला लेते है। पर देश कि विडम्बना है कि विपक्ष और उसके समर्थक बिना ओलम्पिक के नियमों को जाने ही लगे है गंदी राजनीति करने? में और जहां पहलवान की लापरवाही हुई है उसका दोष सत्तापक्ष पर मढ़ने में। सभी जान लें कि ओलम्पिक के अपने नियम होते है वहां भारत की राजनीति का कोई काम नहीं है।

आज का दिन खेल इतिहास में दुखद दिन के रूप में सदैव याद रखा जाएगा। कल तक पूरा भारत खुश था कि हमें एक मैडल निश्चित रूप से मिलेगा ही मिलेगा। पर कहते है ना किस्मत कब बदल जाए यह कोई नहीं कह सकता। देश में खुशी के पल आते-आते दुख में बदल गए। आज हमने ओलम्पिक जैसे बड़े अवसर में देश के लिए एक मेडल को खो दिया है।

हमारे देश के प्रधानमंत्री मोदी जी ने सबसे पहले ट्वीट कर महिला पहलवान विनेश फोगाट को हौसला दिया बल्कि पीटी उषा जी को विरोध दर्ज कराने को भी कहा पर देखते है कि ओलम्पिक आयोजक नियमों के तहत क्या फैसला लेते है। पर देश कि विडम्बना है कि विपक्ष और उसके समर्थक बिना ओलम्पिक के नियमों को जाने ही लगे है गंदी राजनीति करने? में और जहां पहलवान की लापरवाही हुई है उसका दोष सत्तापक्ष पर मढ़ने में। सभी जान लें कि ओलम्पिक के अपने नियम होते है वहां भारत की राजनीति का कोई काम नहीं है।

पर इसे राजनीति रंग देने वालो के लिए सोचने वाली बात है अगर राजनीति करनी होती तो पहले ही इतने बड़े अवसर ओलम्पिक में, इतनी सुविधाओं से लैस करकर महिला पहलवान विनेश फोगाट को नहीं पहुंचाया जाता। जबकि फोगाट ने महिला पहलवान आंदोलन में कहा था कि 'मोदी तेरी कब्र खुदेगी...' तब ही देश के प्रधानमंत्री को धमकी देने और अनुशासनहीनता के जुर्म में फोगाट को ओलंपिक में नहीं जाने दिया जाता। यकीन मानिए अगर ऐसा किसी अन्य देश के खिलाड़ी, उनके देश में करते तो उनका कैरियर खत्म हो चुका होता। पर हमारे यहां खिलाड़ियों से बिना बैर रखे उनको आगे बढ़ने, देश का प्रतिनिधित्व करने का अवसर दिया गया।

इसके अलावा पहले यानि 2016 में जो महिला पहलवान विनेश 53 किलोग्राम में खेलती थी। जो मार्च 2024 में भारत में ओलंपिक ट्रायल के दौरान 53 कि.ग्रा. वर्ग में अपनी जूनियर अंजू से 0-10 से हारी थी और जबरदस्त हंगामा करके 50 किलोग्राम वर्ग में उसी दिन ट्रायल देकर शिवानी को हराया और ओलंपिक के लिए क्वालिफाई किया था। 50 किलोग्राम वर्ग के पहलवानों ने इसका जमकर विरोध किया था लेकिन विनेश का हंगामा ज्यादा भारी पड़ा और फेडरेशन को विनेश की नाजायज मांग के सामने झुकना पड़ा और बिना ट्रायल दिए सीधे खेलने की इच्छा को मानना पड़ा, आज परिणाम आ गया उस जिद का। अगर विनेश फोगाट को 50 किलोग्राम में अपने वजन को घटाकर खेलने का अवसर मिला ही था तो उसे ध्यान रखना था कि वह एक रात पहले आहार तालिका के हिसाब से स्वयं क्या खा रही है। फोगाट ने जो खाया उसमें किसी का कोई दोष नहीं है। खाना, खाना खुद का निर्णय था। लापरवाही भी स्वयं फोगाट ने ही की है पर हम सबको पता ही है भारत के विपक्ष की विडम्बना है कि हर बात पर राजनीति करनी है।

पहले भी महिला पहलवानों को गलत राजनीति में भी विपक्ष ने मुद्दा बनाने के लिए उलझाया था। पर खिलाड़ियों को याद रखना चाहिए कि खेल में राजनीति से नहीं बल्कि अभ्यास और निरंतर अनुशासन से ही सफलता मिलती है। अफसोस है व्यर्थ की राजनीति में पड़कर पहलवानों ने अभ्यास और अनुशासन खो दिया है। फिर भी महिला पहलवान को हिम्मत नहीं हारना चाहिए। हार जीत होती रहती है। आगे ओर भी अवसर आएगे और मेडल मिलेंगे, बस अनुशासन, अभ्यास की निरंतरता बनाए रखना होगा। तुलसीदास जी रामायण में लिखते है कि 'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस करहि सो तस फल चाखा...' एक सच ये भी है कि विनेश फोगाट का वजन 52 किलो 100 ग्राम है, यानि तय सीमा की छूट 2 किलो से 100 ग्राम ज्यादा यानि वास्तव में 2 किलो ज्यादा, इसलिए उसे आगे 55 किलोग्राम के लिए ही मेहनत करना चाहिए। सभी सदैव याद रखें कि ओलम्पिक में भारत का संविधान नहीं चलता, वहां अपने नियम है जो सब खिलाड़ियों को मानकर खेलने पड़ते है।

कविता

सावन सीमा पर

सीमा जोशी

निगाहें
कुछ कह रही थी तुम्हारी !
कह देते ...
इस बार
सावन की गवाही में !
गई दफे
कह नही पाए थे !

अबके
खूब खिला मोगरा
हसरत भरी निगाहों से
तकती रही कलियां
तुम्हे !

बेशुमार
बिखरी थी मुहब्बत
गुलाब पर ठहरी
बूंदे बता रही थी !

इस बार
ले जाना अपने साथ
सावन का हरा और
मेरे मन का केसरिया रंग
लहरा देना सफेद आसमान में !

यादगार
बन पड़ता है सावन
जब बिखर जाते हैं
खुशियों के रंग सीमा पर !

फिर कह उठती है
खून से लिखी मोहब्बतें भी
जय हिंद की सेना !
जय हिन्द !
जय भारत !

लघुकथा

हमेशा के लिए

रामेश्वरम तिवारी

आकाश और वसुधा एक वैश्विक कंपनी की प्रचार-प्रसार शाखा में कार्यरत हैं। आकाश वक्तृत्व कला में कुशल होने के कारण अपनी टीम के सभी सदस्यों का चहेता है। उसकी वाकपटुता से प्रभावित होकर एक दिन वसुधा ने सोचा कि अगर आकाश और वह एक हो जाएँ, तो दोनों मिलकर कारोबार की दुनिया में अपना नाम रौशन कर सकते हैं। सो, मौक़ा देखकर अपने सोच को आकाश के सामने ज़ाहिर किया। और आकाश, तो मानो वसुधा की ओर से विवाह के प्रस्ताव की प्रतीक्षा में बैठा था। अतः बगैर आगे-पीछे सोचे उसने तपाक से वसुधा के प्रस्ताव पर हामी भर दी।

बस! फिर क्या था। दोनों ने मौक़ा देखकर माता-पिता के सामने अपने मनपसंद के साथ विवाह सम्बन्धी विचार रख दिए। प्रथम दृष्टिया दोनों को विजातीय होने के कारण विरोध का सामना करना पड़ा। परिवार के सदस्यों ने दोनों को काफ़ी समझाने-बुझाने की कोशिश की, पर अंततः बच्चों की खुशी की ख़ातिर उनकी ज़िद के आगे मजबूर होकर हथियार डाल दिए।

दोनों पक्षों द्वारा आत्म-संतुष्टि के लिए बक़ायदा आकाश और वसुधा की कुँडली मिलवाई गईं। पंडितों द्वारा पैसों के लालच में राहु-केतु, शनि, मंगल और अमंगल के बीच युति बिठाई गई। बड़े-बूढ़ों के लाख ऐतराज और नाराज़गी के बावजूद रीति-रिवाज के अनुसार धूम-धड़ाके के साथ दोनों की शादी हो गई।

पर जैसाकि कहावत है- 'होनी तो होकर रहे, अनहोनी न होय।' सम्बन्ध विधाता को सम्बन्ध मंजूर नहीं था। नतीजा यह हुआ कि पहली ही रात वसुधा ने आकाश के समक्ष धर्मसंकट खड़ा कर दिया। वह आकाश से बोली- 'लोगों की नज़र में कहने के लिए आज से हम पति-पत्नी अवश्य हो गए हैं, पर वास्तविक रूप में तब तक 'दो जिस्म एक जान' नहीं होंगे जब तक की तुम अपने एटीएम का पॉसवर्ड और अपने माता-पिता से अलग होकर रहने का वादा नहीं करते! इतना कहकर वह कैकेयी की तरह कोप भवन में चली गई।

आकाश ने वसुधा की शर्त पर दीवार से अपना सिर पीट लिया। चूँकि वह अपने माता-पिता का इकलौता बेटा है। उनसे अलग होकर रहने के बारे में सपने में भी नहीं सोच सकता। काफ़ी देर तक भावना के समंदर में ज्वार-भाटे की तरह डूबने-उतराने के बाद आखिर हिम्मत कर उसने वसुधा को दो टूक शब्दों में कहा कि वह मरते मर जाएगा, पर अपने माता-पिता से अलग होकर नहीं रहेगा। आकाश का फ़ैसला सुनकर आधुनिक विचारों की मारी वसुधा ग्रीष्म में तपती हुई धरती की तरह गुस्से से फट पड़ी। और अगली सुबह आकाश की ज़िंदगी में कभी ना वापस लौटकर आने का बोलकर हमेशा के लिए अपने पिता के घर लौट गई।

लघुकथा

सबक

अविनाश अग्निहोत्री

आज बंकू की खुशी का ठिकाना नही था,क्योंकि आज पूरे दो माह बाद वो अपने दादाजी के घर आया है।

दादा दादी ने भी उसके आने की खुशी में उसकी पसंद का खाना,कपड़े, खिलौने सब उसके लिए रख दिए थे।जिन्हें पाकर वह बहुत खुश था।

फिर अपने पूरे परिवार के साथ खाना खाते वो अनायास ही बोल पड़ा। दादाजी एक ही शहर में अब इस उम्र में आपको यहां अलग रहकर काम करने की क्या जरूरत।

आप अब बूढ़े हो गए हो,अब आप हम लोगो के साथ ही रहो। पापा का अच्छा बिजनेस और बहुत बड़ा घर है।

वहां हम सब साथ रहेंगे।सच बड़ा मजा आएगा।

नटखट बंकू की बात सुनकर दादाजी मुस्कुराभर दिए।इस पर वो अपनी दादी का हाथ पकड़ उन्हें दादाजी को समझाने की जिद करने लगा।

तब उसकी दादी ने उसके हाथ पर अपना हाथ रख कहा,बेटा तू अभी बहुत छोटा है।ये बात नही समझेगा कि जिस पेड़ पर फल नही लगते पक्षी भी उनका साथ छोड़ दिया करते है।

बंकू को इतना समझाते,दादी का दिल आज फिर जैसे किसी पुरानी फांस से द्रवित हो उठा।

लघुकथा

इज्जत

सुरेश सौरभ

ट्यूबवेल का मोटर गायब हो गया मंत्री जी के फार्म हाउस से। मंत्री जी को सूचित किया गया।

सारे कार्मचारी बेहद डरे-सहमे थे, मंत्री जी के फार्म हाउस आने पर। एक पुराना वफादार नौकर बोला-'साहेब अब आप ही बताइए क्या किया जाये, पुलिस को सूचित किया जाये?'

'नहीं।' मंत्री जी रोब में बोले।

मालिक आप का पचास-साठ हजार का नुकसान हुआ है, कम से कम एक चोरी की रपट तो लिखानी ही चाहिए। वफादार नौकर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए बोला।

काका हम ऐसा नहीं कर सकते। मंत्री जी मुस्कुराते हुए बोले।

पर क्यों। काका हैरत से बोले।

क्योंकि, इज्जत का सवाल है।

सब मंत्री जी को हैरत से ताकने लगे।

अब तुम सब मुझे न घूरो? जाओ यहाँ से, अपना-अपना काम करो,बस्स आगे से ध्यान रखना।

अब सब कर्मचारी अपने-अपने काम में बिलकुल निश्चिंत होकर जुट पड़े।

व्यंग्यिका

लाट साहब

अनुपमा अनुश्री, भोपाल

फेक टाइप के लाट साहब
घूम रहे इन दिनों ,
कुछ नहीं हैं ,फिर भी कुछ हैं !
इन्हीं से पूछिए कि क्या कुछ हैं!!
अदा ,अंदाज कुछ इस तरह
कि नवाब किसी खानदान से!
करते दो कौड़ी का नहीं
लेकिन दिखाते हैं बिल्कुल शान से !
इंटरनेट ने और कुछ
दिया हो न दिया हो
झूठ के परिंदे खूब उड़े हैं !
जमीन पर टिके नहीं
हवाओं में खड़े हैं।

न अच्छे कार्य की पहल करते हैं
न किसी को प्रोत्साहित
यह तो व्यंग्य बाण चलाकर,
तिरछी निगाह से देख
करते हतोत्साहित
बुद्धिहीन जाने कहाँ-कहाँ
आसन जमा कर बैठे हैं !
हर अच्छी बात को धुएँ में उड़ाते
अपने जैसी अकर्मण्य
जमात से घिरे हैं,
करने वाले करके
निकल जाते हैं अच्छे कार्य ,
ये बेफिजूल में ही बिफरे हैं!

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सौ सौ चूहे खा कर बिल्ली...

(मोहन वर्मा)

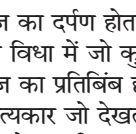

अब ये कहावतें, मुहावरे, कब से और कैसे चलन मे आए इस बात को शोध के लिये छोड़ भी दें तो समाज और लोगों के व्यवहार,आदतों और उनकी कथित चालाकियों को बारीक नजरों से उजागर करने मे ये कहावतें,मुहावरे कम शब्दों मे बड़ा असर करते हैं। अब ये थोड़े इधर उधर जोड़ घटा कर देश के हर हिस्से मे बोले जाते हैं क्योंकि चरित्र सार्वभौमिक है। दरअसल इन्हें व्यंग्यबाण भी कहा जा सकता है।

कहते हैं साहित्य समाज का दर्पण होता है । साहित्य में किसी भी विधा में जो कुछ भी रचा जाता है वो समाज का प्रतिबिंब ही होता है। रचनाकार या साहित्यकार जो देखता है,अनुभव करता है उसमें अपनी कल्पनाशक्ति का तड़का लगाकर शब्दबद्ध करता है,इसीलिए लेखन सीधे-सीधे पाठकों तक पहुंचता हैं । लेखन किसी भी भाषा, बोली में हो वहां की स्थानीयता, लोकोक्ति, मुहावरों,और कहावतो से अछूता नहीं हो सकता।

अब ये कहावतें, मुहावरे, कब से और कैसे चलन मे आए इस बात को शोध के लिये छोड़ भी दें तो समाज और लोगों के व्यवहार,आदतों और उनकी कथित चालाकियों को बारीक नजरों से उजागर करने मे ये कहावतें,मुहावरे कम शब्दों मे बड़ा असर करते हैं। अब ये थोड़े इधर उधर जोड़ घटा कर देश के हर हिस्से मे बोले जाते हैं क्योंकि चरित्र सार्वभौमिक है। दरअसल इन्हें व्यंग्यबाण भी कहा जा सकता है।

कुछ ऐसा ही एक मुहावरा दोहरे चरित्र वालों को लेकर बार बार पढ़ने सुनने मे आता है। सौ चूहे खा कर बिल्ली...। अब कौन सी बिल्ली ने लोगों से छुप कर कब सौ चूहे खाए और कब...को चली ये बात बिल्ली को छोड़कर दुनिया जानती है। बिल्लियां भले खुद को पाक दामन दिखाने की कोशिश करें, बैरी दुनिया से कुछ छुपा नहीं हैं। हालांकि बिल्लियां भी अब इतनी भोली नहीं रही कि वे इस गलतफहमी में रहे कि किसी को कुछ पता नहीं चल रहा।इसीलिए वे बिंदास चूहे भी खाती है और हज या तीर्थाटन के बहाने तथाकथित पाप मुक्ति के प्रयासों में कोई कमी नहीं छोड़ती। यहां ये बताना भी जरूरी है कि ये मुहावरा सिर्फ बिल्लियों के लिए नहीं है, बराबरी से बिल्लो पर भी लागू है।

इस मुहावरे में बिल्लियों के बहाने दोहरे चरित्र वालों पर तंज कस कर ये बता दिया जाता है कि साहेब किसी को भी ग गधे का मत समझो । सब रोटी ही खाते हैं घास नहीं । किसी से कुछ छुपा नहीं। अब बिल्लियाँ सौ सौ चूहे भी खाये और हज या तीर्थाटन के बहाने पाप मुक्ति के बहाने खुद को पाक दामन भी बताती रहे,सबको सब दिखता है भिया...

हालांकि लेखकों के साथ भी भौत आफत है। जो दिखा वो लिखा तो फ्रस्टेड कहलाने के लिए तैयार रहे और नहीं लिखा तो सच्चाई से मुँह चुराने वाला सुनने को तैयार रहें। अब व्यंग्य की तीखी सुई जिसे चुभ गई या जिसे लेख मे अपना चेहरा नजर आने लग गया हो ऐसे बिल्लो और बिल्लियों को हम कोई आईना थोडी बता रहे हैं। मुहावरे में बिल्ले या बिल्ली की जगह कोई खुद को रख के आत्मावलोकन करें तो लेखक बेचारा क्या करे,कोई बतायेगा..?

जब शोर-शराबे के बीच शांत हो गया विशाल कैनवास

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

रेखांकन और अपने चित्रों को महान बनाने के लिए, चित्रों में जीवंतता लाने के लिए, चित्रों में सजीवता लाने के लिए राजा रवि वर्मा ने अनेक शास्त्रीय ग्रंथों का अध्ययन किया। वेद-पुराण, उपनिषद्, चित्रसूत्र, नाटक, साहित्य तथा अपने छोटे भाई के साथ विभिन्न स्थानों पर जाकर रहन-सहन, वेष-भूसा, समाज पर नाटक मंडलियों के प्रभाव का गहन अध्ययन करने के बाद अपने चित्रों का रूप, अपने चित्रों का रंग, अपने चित्रों के पीछे का पृष्ठभूमि अपने चित्रों के भाव-भंगिमा लय-छंद यह सारे गुण ये अपने अध्ययन से ही सम्भव कर पाए और यही सारा अध्ययन इनका अपना, इनकी अपनी विशेषता बन कर उभरी जिसके फलस्वरूप इनके मस्तिष्क पर कैरेक्टर को लेकर शास्त्रीयता परक भावनाएं पनप सकीं। कहा जाता है कि यात्रा के बाद इनके चित्रों में पृष्ठभूमि के भी दर्शन होने लगे हालांकि पृष्ठभूमि बनाने का कार्य इनके भाई का होता था।

संस्कार और संस्कृतियों के विशाल पटल पर चमकता भारत जहाँ भरतमुनि, पतंजलि, आर्यभट्ट जैसे लोगों का जन्म हुआ हो, अजंता, एलोरा, खजुराहो, कोणार्क जैसी थाती से भरी पुरी धरा भारत को लगभग 1000 पृष्ठों के बैश्विक कला पर लिखी जा रही पुस्तक में केवल एक आध पन्ने पर समेट देना क्या भारत के कला के साथ न्याय कहलाएगा? लेकिन यहाँ ऐसा हुआ। एक कला समीक्षक द्वारा वैश्विक कला पर पुस्तक लिखते हुए भारतीय कला को महज एक पन्ने में समेट दिया।

फिर वर्मा जी के चित्रों पर अच्छे समीक्षा की उम्मीद बेइमानी सी प्रतीत होती है। आम भारतीयों के निगाहों में अपने कला के जरिए रच-बस जाने वाले राजा रवि वर्मा गाहे-बगाहे समीक्षकों के भी अच्छे बुरे दौर से गुजरे हैं। ई.वी. हैवेल जिनका योगदान भारतीय कला को अंग्रेजी मानसिकता से मुक्त कराने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण रहा। बीसवीं शताब्दी के शुरूआत में जब भारतीय युवा कलाकार विदेशी शैली, विषयवस्तु की तरफ आसानी से फिसलते जा रहे थे उस समय उन कलाकारों को भारतीय कला थाती के प्रति जगा कर उन्हें भारतीय थाती के बल पर आगे बढ़ने को प्रोत्साहित कर भारतीय कला जगत के लिए एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा किये थे जिसकी गिनती उस समय के महत्त्वपूर्ण कार्यों में होती है लेकिन रवि वर्मा पर उनकी भी नजर कुछ टेढ़ी ही थी, वर्मा जी पर भारतीय काव्य की मूल भावना से हटने का आरोप लगाया है हैवेल साहब ने। हो सकता है उनके निगाह में उनको अपनी बातें सहीं प्रतीत लगती हों पर इस बात पर बहस के पहले उनके कुछ चित्रों पर गौर करने की जरूरत सी महसूस हो रही है। चित्र शकुन्तला का अपने प्रिय को देखना, देश में तैल रंग के शुरुआत का दौर, शुरुआत में बिना प्रशिक्षण के ही इतना मनभावन संयोजन, केश, वस्त्र, रंग, एनाटॉमी और भावों का आपसी संतुलित सामंजस्य। बहाना पैर से काँटा निकालने का और निगाह पीछे तनिक दूर किसी के ऊपर एकटक आँखें, उम्मीद की सागर सी जान पड़ती हैं। क्या विवाह के पूर्व राम और सीता के एक दूसरे को निहारने को लेकर जो काव्य रचे गये हैं, से कम काव्य आँका जा सकता है इस चित्र में? पृष्ठभूमि में सहयोगी जल, जमीन, जंगल खुद ही कविता कहने में सक्षम है। हालांकि कहना नहीं चाहिए लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि हैवेल के इस कथन के पीछे उनके बंगाल स्कूल और वास पद्धति के प्रति प्रेम का असर है। हरिश्चंद्र और तारामती नामक चित्र में तारामति की व्यथित आँखों को देखकर करुण रस से युक्त पूरा ग्रंथ लिखा जा सकता है। दु:खी शकुन्तला चित्र में भी मुख पर बेदना जैसे सब कुछ खो जाने का भान अनायास ही दीख पड़ता है। क्या हम मान सकते हैं कि मौलिकता को दिखाना कला नहीं है क्या यह सच है ऐसे ही तमाम प्रश्न उठाए गए थे राजा रवि वर्मा को लेकर के, उनकी कृतियाँ धार्मिक है, उनके कृतियों में किस्सा हुआ करता था, उनके कृतियों में संस्कार हुआ करता था, उनके कृतियों में संस्कृति हुआ करती थी, उनके कृतियों में समाज हुआ

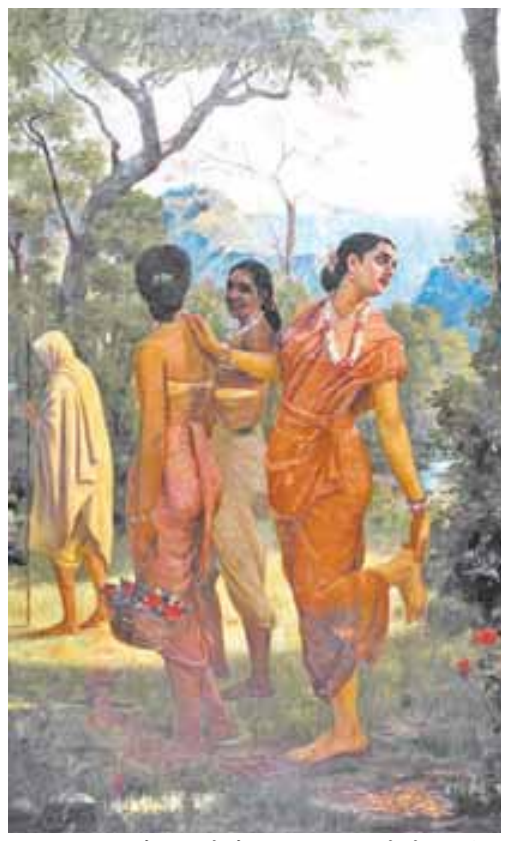

करता था, उनके कृतियों के दर्शक हुआ करते थे उनकी कृतियाँ लोगों के जेहन में उतर गई थी। बस समस्या यह थी कि उनकी कृतियाँ यथार्थ के धरातल पर थीं फलत- कला में उनके कद को लेकर विवाद हमेशा व्याप्त रहा। जीते जी भी उन्हें कई विवादों से गुजरना पड़ा कोर्ट तक के चक्कर लगाने पड़े और अपना वकील भी खुद ही बनना पड़ा हालांकि तार्किक क्षमता के बल पर जीत भी हासिल हुई। विवाद तब भी था विवाद आज भी है। प्रसंशक तब भी थे प्रसंशक आज भी हैं तब रविंद्र नाथ टैगोर के भतीजे बालेंद्र नाथ टैगोर जैसे लोग उनके कृतियों के प्रसंशक हुआ करते थे और आज....

25 वर्षीय युवक बिना किसी प्रशिक्षण के बियना के चित्र प्रदर्शनी में स्वर्ण पदक प्राप्त करता है। लोगों की निगाह यहीं से इनकी तरफ को मुड़ती है। इसे एक संयोग ही कहा जा सकता है कि 1873 में चेन्नई में पहली प्रदर्शनी करने वाले वर्मा जी ठीक 20 साल बाद 1893 में शिकागो में आयोजित वर्ल्ड कोलंबियन एग्जीबिशन में स्वामी विवेकानंद के आग्रह पर भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं और लगभग 10 चित्र प्रदर्शित करते हैं। इस प्रदर्शनी की गिनती 19वीं शताब्दी की भव्यतम अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में होती है। रवि वर्मा को पुरस्कृत भी किया गया। 20 वर्षीय संयोग के बाद शतकीय संयोग भी बना और 1993 में उनके चित्रों की एक भव्य प्रदर्शनी राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली में हुई प्रदर्शनी के बाद विरोध भी हुआ। खुले तौर पर विरोध हुआ। आधुनिक भारतीय कलाकार जो उस समय सक्रिय थे, में कुछ खुद को प्रमुख मानने वाले कलाकार राजा रवि वर्मा के इस प्रदर्शनी को लेकर कुछ ज्यादा ही विचलित थे जिनका मानना था कि ऐसे कलाकार जिनका कोई योगदान ही ना हो कला में, को इस तरह प्रमोट करने से भारतीय कला को भला क्या फायदा पहुँच सकता है? बावजूद इसके प्रदर्शनी हुई और सराही भी गई। राजा रवि वर्मा के चित्र लोगों के जेहन में आज भी जस के तस बरकरार है। प्रसिद्ध कला समीक्षक शेरमान ली की बात-

%कोई भी महान कला या धर्म जनसाधारण की समझ के परे नहीं होती और वह यदि ऐसी नहीं है तो वह असफल है%। मतलब वर्मा की कला महान भी है और सफल भी कारण जनसाधारण के समझ में है। उनकी एक कृति 2007 में करीब सवा आठ करोड़ में बिकी, यही महानता उनकी सदा बनी रहे।

उनके प्रमुख चित्रों में लक्ष्मी, सरस्वती, भीष्म प्रतिज्ञा, राधा माधव, कृष्ण को सजाती यसोदा, द्रौपदी, गंगावतरण ,शकुंतला, श्रीकृष्ण और बलराम, सत्य हरिश्चन्द्र, दूत के रुप में कृष्ण, रावण और जटायु, कुलीन महिलायें, भिक्षादान, दादाभाई नौरोजी, विराटा का दरबार, माँ व बच्चा, विचारमग्न युवती, संगीत सभा, अर्जुन व सुभद्रा, कण्व ऋषि के आश्रम की ऋषि कन्या, हंस दमयंती, महारानी लक्ष्मी बाई, मानिनी राधा, फल लिए हुए स्त्री, वीणा बजाती हुई स्त्री, चांदनी में बैठी स्त्री मराठी युवती प्रेम पत्र आदि हैं। ऑकर यल्लो, सीपिया तथा सैप ग्रीन का अधिक प्रयोग इनके चित्रों में दिखाई पड़ता है। इनके चित्र मद्रास, गुजरात, दिल्ली जैसे जगहों पर सुरक्षित हैं।

कहते हैं कि फिल्मों के निर्माण प्रक्रिया के पीछे भी रवि वर्मा का हाथ है। दादा साहब फाल्के जो फिल्म राजा हरिश्चंद्र के निर्माणक हैं पहले वर्मा जी के साथ उनके लिथोग्राफ प्रेस में इन्ग्रेविंग का काम करते थे। वर्मा जी ही इनके प्रतिभा को निखारने में इनकी मदद किये धीरे-धीरे यहाँ? घाटा होने लगा और अंत में प्रेस बंद हो गया। रवि वर्मा टूटने के बजाय फिर से उठ खड़े हुए बड़े-बड़े कैनवास पर कई-कई घण्टे लगे रहते थे कभी-कभी सन्तुष्टि की सीमा तक पहुँचने में सालों लग जाते थे रमें रहते थे अपने कृतियों में आगे चलकर यात्राएं भी कम हो गई। लोगों के विरोध और पटाक्षेप ने भी इनके दिनचर्या को काफी प्रभावित किया। वर्मा जी अन्तिम समय में अपने आपको अपने कृतियों तक ही सीमित कर लिए थे। जब हर ओर सन्नाटा पसरा हुआ होता था तब इनके कैनवास पर शोर-शराबा हो रहा होता था, एक नई दुनिया रची जा रही होती थी और इसी शोर-शराबे के बीच एक दिन कलाकार रवि वर्मा हमेशा के लिए शांत हो गये। कुछ कोरे कैनवास उनके ब्रश और रंगों के साथ को तड़पते ही रह गये। वो तड़पन आज जबकि आधुनिकता की ज़द अनहद हो गई है, कैनवास वही साथ और भाव पाने को तड़प रहे हैं, तड़प रहे हैं लोग वैसे चित्रों को।

रवि वर्मा जिनको तत्कालीन वायसराय ने इनकी प्रतिभा को देखते हुए राजा की उपाधि से नवाजा था, राजा की भांति ही जीवन जीते रहे और राजा की भांति ही सबके दिलों में विशेषतः चित्रप्रेमियों के, हमेशा जिंदा रहेंगे।

तुलसी के राम शोषण मुक्त समाज के प्रतीक

तुलसीदास जयंती पर विशेष

सुसंस्कृति परिहार

तुलसीदास एक क्रांतिकारी कवि हैं उन्होंने मुस्लिमकाल में अन्याय का सक्रिय विरोध तथा चरमराती सामाजिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित तौर पर संचालित करने की उमंग लिए,राम के आदर्श चरित्र को रामचरितमानस में निर्मित किया ताकि देश में जनजागरण हो। उनके राम में आज्ञाकारी पुत्र,स्नेही भाई और मित्र का जो स्वरूप लोगों ने देखा वह प्रभावकारी था किंतु अन्याय के ख़िलाफ़ उनके धनुर्धर रूप ने जनमानस में आशा का संचार किया। यह तुलसी की सबसे बड़ी उपलब्धि है अगर राम का यह योद्धारूप ना होता तो शायद यह कवि भी टिमटिमा के बुझ गया होता किंतु तुलसी आज अपने राम के साथ अमर हैं ।

एक किवदंती है कि बांसुरी वाले कृष्ण से तुलसी ने कहा था कि- - उनका माथा तब झुकेगा जब वे हाथ में धनुष बाण लेंगे --

कहां कहूं छवि आपकी ,भले बिराजे नाथ।
तुलसी मस्तक तब नवे, धनुष बाण ल्यों हाथ।

आज जब शासन व्यवस्थाएं चरमरा रही हैं अनैतिकताओं का सर्वत्र बोलबाला है ऊंच-नीच जातिवाद, धर्मांधता और अपसंस्कृति से मानवता को खतरे बढ़ रहे हों पूंजीवाद अपने पैर अंगद की तरह जमा चुका हो। भाई-भाई यहां तक कि पति-पत्नी के बीच विभेद की दीवार खड़ी हो। धन लोलुपता सत्ता प्राप्ति का एकमेव लक्ष्य हो तब तुलसी के राम आज और अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं ।रमा विलास राम अनुरागी ,

तजत वमन इव नर-नारी ।

यानी लक्ष्मी के ऐश्वर्य को राम के अनुयायी उल्टी की तरह त्याग देते हैं। यह पंक्तियां स्पष्ट तौर पर आज के तथाकथित राम भक्तों पर सीधे वार करती हैं। राम अनुरागी की पहली शर्त तो यही है कि वह ऐश्वर्य से दूर रहे। आज दुनिया माया के पीछे दौड़ रही है। आमजन भी इस दौड़ में शामिल होने बेचैन हो रहे हैं ,तब राम भक्तों से भरे हिंदुस्तान में यदि उपर्युक्त पंक्तियों को ज़ेहन में उतार लिया जाए, तो भारत की तस्वीर बदल सकती है ।

राम को तुलसी ने दारिद्र्य नाशक के रूप में भी रेखांकित किया है-

दीनता दारिद्रय दलै को कृपा वारिधि बाज
या
तुलसी भजु दारिद दोष ,
दावानल संकट कोटि कृपानहिं रे ।

कहने का आशय यह कि तुलसी के राम नए शोषण मुक्त समाज के प्रतीक हैं । यही वजह है कामायनी के लेखक जयशंकर प्रसाद ने तुलसी और राम के संबंध में एक बड़ी मार्मिक पंक्ति लिखी थी -'मानवता को सदय राम का रूप दिखाया ।' तुलसी परस्पर सौहार्द्र के मजबूत धागे से सब को जोड़ते हुए लिखते हैं-

सब नर करहिं परस्पर प्रीति,
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुत नीति ।

वे सबसे बड़ा धर्म दीनों की सेवा और सबसे बड़ा पाप उनका उत्पीड़न मानते हुए कहते हैं -

परहित सरस धर्म नहिं भाई,
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।

कहना न होगा कि तुलसी के राम सर्वजन हिताय- सर्वजन सुखाय भावना वाले हैं। सर्वहारा वर्ग के प्रति उनका झुकाव है क्योंकि तुलसीदास स्वतः जातिवादियों के शिकार हुए उन्होंने तरह-तरह के अपमान सहे और सामाजिक प्रवंचनाओं को झेला इसीलिए उनके राम इन व्यवस्थाओं के सख्त खिलाफ है -

धूत कहौ अवधूत कहौ रजपूत कहौ जुल्हा कहौ कोऊ----
तुलसी सरनाम गुलाम राम कौ जाकौ रचे सौ कहे कछु ओऊ

दूसरी ओर वे कोल ,किरातों को जिन्हें मुगल बादशाहों के वक्त आखेट के काम में लाया जाता था, तथा पकड़े जाने पर काबुल के बाजार में उन्हें बेचा जाता था, राम से मिलवाते हैं।

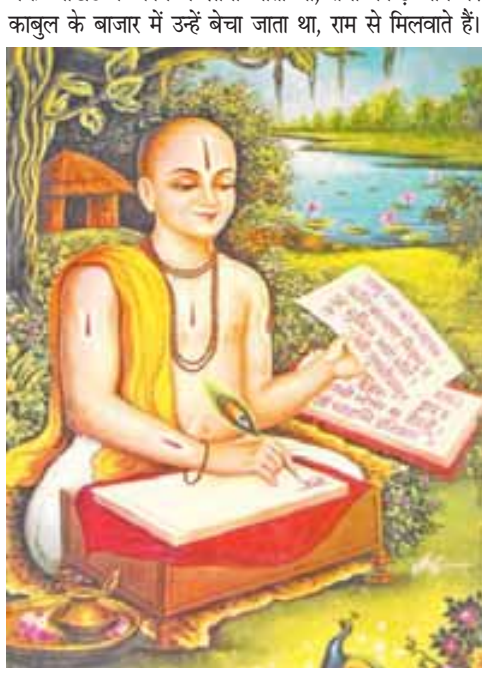

शबरी के बेर खिलाते हैं। केवट और निषाद को भ्राता सम कहलवाते हैं। इसके पीछे लेखक के मन की जनवादी विचारधारा होती है। जनवाद का उनके राम पोषण करते हैं हालांकि राम के वक्त वर्ण हीन समाज नहीं था किंतु सरयू के राजघाट पर चारों वर्ण एक साथ स्नान जरूर करते हैं -

राजघाट सब विधि सुंदर वर ,
मज्जहिं यहां बरन चारिऊ नर।

उनके राम न्याय अन्याय के संघर्ष में तटस्थ नहीं हैं वे न्याय का सक्रिय पक्ष लेते हैं। लक्ष्मण के मुकाबले वे ज्यादा धैर्य दिखाते हैं लेकिन उनके धैर्य की एक सीमा है वह शस्त्र उठाने में जरा भी देर नहीं करते ।जब समुद्र राम को रास्ता नहीं देता। समझाने, विनती करने पर भी नहीं पसीजता तब तुलसी कहते हैं-

विनय न मानत जलधि जड़ ,गए तीन दिन बीत ।
बोले राम सकोप तब , भय बिन होय न प्रीत ।।

इसी भांति रावण का अन्याय देख पहले दूत द्वारा राम उसे समझाने की चेष्टा करते हैं लेकिन वह जब नहीं मानता तो उसका हृदय परिवर्तन करने अनशन या सत्याग्रह नहीं करते, सीधे युद्ध छोड़ देते हैं। राम का तमाम चरित आत्मपीड़ा द्वारा निष्क्रिय प्रतिरोध का खंडन करता है यह महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य है जिनकी आज समाज को जरूरत है ।

तुलसी जनता के दुख दर्द ,क्लेश बड़े यथार्थवादी ढंग से लिख जाते हैं --

खेती न किसान को भिखारी को न भीख ,बली बनिक को बनिज ना चाकर को नौकरी ।

वे कुशासन पर मौन नहीं रहते प्रजा के संघर्ष में शामिल हो जाते हैं---

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ,
ते नृप अवसि नरक अधिकारी ।

उन्होंने दुष्ट राजाओं पर भी प्रहार किए तथा भारतीय जनमानस की आशाओं को मूर्त रूप देते हुए समता के आधार पर एक सुखी समाज की परिकल्पना भी की -

अल्प मृत्यु नहीं कविनिऊ पीरा,
सब सुंदर सब निरुज सरीरा ।
नहीं दरिद्र कोऊ दुखी दीना,
नहीं कोऊ अबुध ना लच्छन हीना ।।

यही रामराज्य की आधारशिला है ।वे पोंगा पंथियों को यह भी बताने की चेष्टा करते हैं कि सुखी समाज स्वर्ग में नहीं वरन इसी जीवन में इसी धरती पर बना है ।उनका स्वर्ग अवध में है । राम से वे कहलाते हैं ---

जद्यपि सब वैकुंठ बखाना,
वेद पुराण विदित जग जाना ।
अवध सरिस मोहि ना सोऊ,
यह प्रसंग जाने कोऊ-कोऊ ।।

तुलसी ने जिस सुखी समाज की कल्पना की थी ।वह मनुष्य के प्रयत्न से ही संभव है । सुखी समाज का तुलसी का सपना श्रमिक जनता के लिए धरोहर है जिससे प्रेरित होकर वह समाजवाद की ओर अग्रसर हो सकती है। श्रेष्ठ समाज हेतु यह विचार महत्वपूर्ण है ।

अतएव कहा जा सकता है कि तुलसी ने जिस राम की कल्पना की वह दैवीय नहीं ,मानवी है और धरती के दुख सुख से संपृक्त है इसीलिए वे इन मूल्यवान बातों को सामने रखते हैं जिससे समाज स्वस्थ हो सकता है। मानवता की रक्षा हो सकती है। यही वजह है कि तुलसी के राम देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी लोकप्रिय हैं ।यह बात और है कि तुलसी के राम आकृष्ट तो करते रहे हैं लेकिन उन्होंने जन मानस को आंदोलित नहीं किया उनके दैवीय रूप में लोगों को उलझाए रखा उनके जुझारू स्वरूप का दमन कर दिया गया । काश ! रामचरितमानस की सही टीकायें और व्याख्याएं होतीं तो तुलसी के राम के चरित ने जन-जन को जागृत कर दिया होता और देश ना केवल सुव्यवस्थित होता बल्कि राम के नाम का सदुपयोग कर उसे तुलसी के रामराज्य की ओर ले जाता ।

बहरहाल यह तय है कि तुलसी के राम जनमानस में अभी बरकरार हैं ।उनकी छवि कायम है उसकी सही पहचान करानी होगी तब आप पाएंगे कि जिस राम ने तुलसी को बल और सम्मान दिलाया वे निर्बल , दलित, आदिवासी और आमजन के भी बल है। उन्हें इसे विवेक पूर्ण तरीके से अपनाना होगा।तभी वे निर्बल के बल राम हो पायेंगे तथा शोषण मुक्त समाज की स्थापना संभव हो सकेगी ।

तुलसीदास की राम भक्ति में है अजब सी शक्ति

तुलसीदास जयंती पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

रामचरित मानस के जरिये समूची मानव जाति को श्रीराम के आदर्शों से जोड़ते हुए श्रीराम को जन-जन के राम बना देने वाले गोस्वामी तुलसीदास को जन-जन के कवि कहा जाता है। तुलसीदास को आखिर गोस्वामी क्यों कहा जाता है, यह जानना दिलचस्प है। दरअसल गोस्वामी का अर्थ है, इंद्रियों का स्वामी अर्थात् जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया हो यानी जितेन्द्रिय। तुलसीदास जी पत्नी के धिक्कारने पर सांसारिक मोहमाया से विरक्त होकर संन्यासी अर्थात् जितेन्द्रिय या गोस्वामी हो गए थे। इसी परिप्रेक्ष्य में तुलसीदास जी को गोस्वामी की उपाधि से विभूषित किया जाने लगा। महान् ग्रंथ 'श्री रामचरित मानस' के रचयिता और मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम के अनन्य भक्त तुलसीदास की जयंती विक्रमी संवत् के अनुसार हर साल श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को मनाई जाती है, जो इस वर्ष 11 अगस्त को मनाई जा रही है। विक्रमी संवत् 1554 में उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के राजापुर नामक गांव में जन्मे तुलसीदास ने जीवन की मुसीबतों से हार मानने के बजाय तमाम कठिनाईयों का डटकर मुकाबला किया।

तुलसीदास जी का विवाह दीनबंधु पाठक की अत्यंत विदुषी पुत्री रत्नावली से हुआ था। तुलसीदास रत्नावली पर अत्यंत मुग्ध थे और उससे बहुत प्रेम करते थे। एक दिन की बात है, रत्नावली अपने मायके गई हुई थी लेकिन तुलसीदास को उसकी याद सता रही थी। रात का समय था, मूसलाधार बारिश हो रही थी, ऐसे मौसम में भी तुलसीदास उफनती नदी को पार कर पत्नी से मिलने देर रात उसके मायके जा पहुंचे। रत्नावली अपने पति तुलसीदास के इस कृत्य पर बहुत लज्जित हुई और ताना मारते हुए तुलसीदास को कहा कि जितना प्रेम हाड़-मांस के मेरे इस शरीर से कर रहे हो, यदि उतना ही प्रेम प्रभु श्रीराम से किया होता तो भवसागर पार हो गए होते। लज्जित अवस्था में पत्नी द्वारा मारे गए ताने ने तुलसीदास के जीवन की दिशा बदल डाली। उसके बाद उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया और वे भगवान राम की भक्ति में रम गए।

उसी दौरान एक दिन स्वामी नरहरिदास उनके गांव आए, जिन्होंने तुलसीदास को दीक्षा देते हुए आगे के जीवन की राह दिखाई। उसके बाद तुलसीदास ने रामकथा में ही सुखद समाज की कल्पना करते हुए इसे आदर्श जीवन का मार्ग दिखाने का माध्यम बना लिया। गुरु नरहरिदास से शिक्षा-दीक्षा लेने के बाद ही उन्हें रामचरित मानस लिखने की प्रेरणा मिली। गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित इसी 'रामचरित मानस' को आज भी देशभर में एक महान् ग्रंथ के रूप में बड़े ही आदर और सम्मान से साथ देखा जाता है। तुलसीदास जी ने वैसे अपने जीवनकाल में कवितावली, दोहावली, हनुमान बाहुक, पार्वती मंगल, रामलला नहछू, विनयपत्रिका, कवित्त रामायण, बरवै रामायण, वैराग्य संदीपनी इत्यादि कुल 12 पुस्तकों की रचना की किन्तु उन्हें सर्वाधिक ख्याति रामचरित मानस के जरिये ही मिली। हालांकि जब उन्होंने रामचरित मानस की रचना की थी, उस जमाने में संस्कृत भाषा का प्रभाव बहुत ज्यादा था, इसलिए आंचलिक भाषा में होने के कारण शुरूआत में इसे मान्यता नहीं मिली थी लेकिन सरल भाषा में होने के कारण कुछ ही समय बाद यह ग्रंथ जन-जन में बहुत लोकप्रिय हुआ।

गोस्वामी तुलसीदास को कुछ विद्वान सम्पूर्ण रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि का अवतार भी मानते हैं। महर्षि वाल्मीकि द्वारा संस्कृत में रचित 'रामायण' को आधार मानकर गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना सरल अवधी भाषा में की थी। अवधी खासकर उत्तर भारत में जनसाधारण की भाषा है, इसीलिए सरल अवधी भाषा में होने के कारण रामचरित मानस अत्यधिक प्रसिद्ध हो गई। यही कारण है कि गोस्वामी तुलसीदास को जन-जन का महाकवि और कविराज माना जाता है। वे दुनिया के पहले ऐसे कवि है, जो अपनी रचनाओं को ही अपने माता-पिता कहते थे।

रामचरित मानस के जरिये मनुष्य के संस्कार की कथा लिखकर उन्होंने इस रामकाव्य को भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व बना दिया। तुलसीदास के अनुसार तुलसी के राम सब में रमते हैं और वे नैतिकता, मानवता, कर्म, त्याग द्वारा लोकमंगल की स्थापना करने का प्रयास करते हैं। उन्होंने रामचरित मानस को जरिया बनाकर समस्त भारतीय समाज को भगवान श्रीराम के रूप में ऐसा दर्पण दिया है, जिसके सामने हम बड़ी आसानी से अपने गुण-अवगुणों का मूल्यांकन करते हुए अपनी मर्यादा, करुणा, दया, शौर्य, साहस और त्याग का आकलन कर श्रेष्ठ इंसान बनने की ओर प्रवृत्त हो सकते हैं। रामभक्ति के पर्याय बने गोस्वामी तुलसीदास ने सत्य और परोपकार को सबसे बड़ा धर्म तथा त्याग को जीवन का मंत्र मानते हुए अपनी रचनाओं के माध्यम से असत्य, पाखंड, ढ़ोंग और अंधविश्वासों में डूबे समाज को जगाने का हरसंभव प्रयास किया।

'के-ड्रामा' की बुनियाद पर वेबसिरीज़ ऐसे बनती है

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

लम्बे अरसे से टेलीविजन के पुराने खिलाड़ी रहे निर्देशक उमेश बिष्ट ने सही समय पर सही कदम उठाकर वेब सिरीज की ओर कदम बढ़ाया है । पहले -' ओ तेरी ' और 'पगलेट' बनाकर इस बाज़ार की फील्ड सेटिंग देखी और फिर 'ग्यारह -ग्यारह' बनाकर सिक्सर जड़ दिया ।कहानियों की संवेदना वाले पक्ष पर उनकी पकड़ अच्छी रहती है और यदि ठीक -ठीक कलाकार मिल जाये तो वे कुछ बेहतर करने की स्थिति में होते हैं ।इस बार उमेश वेबसिरीज़ 'ग्यारह ग्यारह' में इस एक कोशिश में सफल रहे हैं । फिल्म 'किल' से बड़े परदे पर हिट हुए राघव जुयाल इस सिरीज़ का प्रमुख आकर्षण हैं।'गहराइयां' वाले धैर्य करवा और 'बम्बई मेरी जान' वाली कृतिका कामरा, तीनों ने कैमरे के सामने ऐसा अभिनय किया है जिसे उनके अब तक के श्रेष्ठ अभिनय में गिना जायेगा । करण जौहर और उनकी टीम ने उमेश विष्ट के निर्देशन में जो एक देखने लायक वेबसिरीज़ बनाई है उसमें इस सिरीज़ के लेखकों संजय शेखर , पूजा बनर्जी , गौतम गोविंद शर्मा और समीर सरल शर्मा की भूमिका भी अहम रही है ।

भारत में कोरियाई टीवी सीरियल्स (जिन्हें के ड्रामा कहते हैं) की लोकप्रियता पिछले दिनों खूब बढ़ी है और अब हर ओटीटी पर ये कहानियां हिन्दी में डब होकर देखी जा रही हैं। 'ग्यारह ग्यारह' ऐसी ही एक कोरियाई सीरीज 'सिगनल' का हिन्दी अनुकूलन है। ज़ी-फाईव चैनल पर ओटीटी प्लेटफार्म पर यह वेब सिरीज 09 अगस्त को रिलीज हुई है ।कहानी मुख्य रूप से पुलिस की कार्यप्रणाली को दिखाती है। तीन अलग अलग कालखण्डों के किस्से आपस में यूं गुत्थमगुत्था हैं कि एपीसोड दर एपीसोड कहानी एक चरित्र को धकेलकर दूसरे चरित्र को चस्पा करती रहती है ।इन सबके बीच एक खास समय है, ग्यारह बजकर ग्यारह मिनट, एक वॉकी टाकी जो दुनिया की नजरों में कबाड़ है, और दो ऐसे चरित्र जो घड़ी की दो सुइयों की तरह बार बार एक दूसरे के ऊपर नीचे से गुजरते रहते हैं उनको आधार बनाकर अच्छी कहानी गढ़ी गई है । एक और बड़ी खूबी इस सिरीज़ की यह है कि भिन्न भिन्न तेवर और पृष्ठभूमि वाले इन चरित्रों का निर्वाह कुशल अभिनय और कसी हुई पटकथा से सहज-सम्भव हुआ है ।

मूलतः यह सिरीज एक अपराध कथा है जिसमें विज्ञान और विश्वास दोनों का सन्तुलन बनाने की कोशिश की गई है उसी से कुछ नये समीकरण सतह पर आते हैं ।उत्तर प्रदेश पुलिस से लेकर उत्तराखण्ड पुलिस तक के बीच की पुलिसिया तौर तरीकों को ,कहानी का मुख्य आधार बनाया गया है। कुछ गलतियों को छोड़ दें तो यह सिरीज ओटीटी पर अरसे बाद दिखी एक अच्छी क्राइम सिरीज है। सस्पेंस फिल्मों के शौकीनों के लिए इसमें अतिरिक्त मसाला है और सिरीज का निर्देशन, इसका अभिनय और इसका संगीत इसकी जान है। उमेश बिष्ट ने वेब सिरीज़ 'ग्यारह ग्यारह' के लिए 'सिगनल' का हिंदी अनुकूलन कितना सटीक किया है, इस पर टिप्पणी बिना मूल सिरीज देखे करना उचित नहीं होगा लेकिन एक हिन्दी वेब सिरीज के तौर पर विषय और इसका भूगोल उन्होंने ठीक चुना है। पहाड़ों पर लोक कथाएं बहुत प्रचलित होती हैं। वहां इनका लौकिक रहस्य अपने कथानक के साथ साथ अपने वातावरण से भी खुराक पाता है, इस मामले में उमेश अपने प्रयास में सफल भी रहे। पटकथा लेखन में उन्हें संजय शेखर और पूजा बनर्जी का अच्छा साथ मिला और संवाद भी गौतम गोविंद शर्मा व समीर सरल शर्मा ने ठीक ही लिखे हैं। थोड़ा इसमें पहाड़ी टच और होता तो बेहतर होता क्योंकि अभी इसके किरदार देहरादून की बजाय पोंटा साहिब की तरफ ज्यादा झुके हुए हैं।

सिरीज में युग आर्या की भूमिका में राघव जुयाल ने अपने अभिनय का एक नया आयाम खोला है। वह अच्छे अभिनेता बनते जा रहे हैं, बस उन्हें इस बात को अपने अभिनय में दिखाना ही नहीं है एक अच्छा अभिनेता वही हैं जो भूमिका के हिसाब से चले, अपनी कलाकारी के हिसाब से नहीं। इस लिहाज से उनके लिए ये अदाकारी का संक्रमण काल है। यहाँ से आगे वह एक बेहतरीन कलाकार के रूप में खुद को हिंदी सिनेमा में स्थापित कर सकते हैं।वामिका की भूमिका का जो अतीत है, उसका बोझा वर्तमान मे ढोने में कृतिका ने काफी मेहनत की है। शौर्य अटवाल के पिता के साथ वाले उनके दृश्य काफी भावुक हैं और एक चरित्र की अपनी कमजोरियों व ताकतों दोनों का उन्होंने अच्छा संतुलन अपने अभिनय में बनाए रखा है।

तकनीकी तौर पर यह वेबसिरीज ओटीटी जी फाइव के स्तर की ही है। कम बजट में अच्छी सिरीज बनाने का पूरा दबाव उमेश बिष्ट ने झेला है और उसमें कमोबेश वह सफल भी रहे हैं। एक बैठक में एकाधिक फिल्म अथवा सिरीज़ देखने की वृत्ति के चलतेअरसे बाद कोई ठीक-ठीक क्राइम सिरीज आई है, जिसे आप हमारी सलाह पर देख सकते हो।

तिरंगा हर भारतवासी का गौरव: हेमंत खंडेलवाल

हर घर तिरंगा अभियान को लेकर आयोजित की गई पत्रकारवार्ता

बैतूल। हर घर तिरंगा अभियान को लेकर शनिवार को जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में पत्रकार वार्ता आयोजित की गई। पत्रकार वार्ता को संबोधित करते पूर्व सांसद और विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पूरी दुनिया में भारत का तिरंगा लहरा रहा है। तिरंगा हमारी पहचान है और हर भारतवासी का गौरव है, इसे देखकर हर देशवासी के मन में राष्ट्रीयता की भावना जागृत हो जाती है। इसी दृष्टि से भारतीय जनता पार्टी द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर 'हर घर तिरंगा' अभियान चलाया जा रहा है। श्री खंडेलवाल ने कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के आवाह्न पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा के नेतृत्व में चलाए जा रहे इस अभियान के दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं का प्रयास रहेगा कि प्रदेश के 1.5 करोड़ परिवारों तक तिरंगा ध्वज पहुंचेगा और उसे हर घर पर फहराया जाएगा। उन्होंने बताया कि 11 अगस्त से शुरू होकर 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा अभियान चलाया जावेगा। आमला विधायक डा. योगेष पंडाग्रे ने बताया कि हर घर तिरंगा अभियान में सरकार, समाज के साथ पार्टी

संगठन की सक्रिय भूमिका होगी। समाज का हर वर्ग इस अभियान में सहभागिता करे, इसकी चिंता पार्टी कार्यकर्ता करेंगे। श्री पंडाग्रे ने बताया कि हर घर तिरंगा अभियान की शुरुआत तिरंगा यात्राओं और महापुरुषों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण के साथ होगी, इससे एक दिन पहले महापुरुषों के प्रतिमा स्थलों पर स्वच्छता अभियान चलाया जएगा। युवा मोर्चा द्वारा 11, 12 व 13 अगस्त को प्रदेश की प्रत्येक विधानसभा में तिरंगा यात्राओं का आयोजन किया जाएगा। 12, 13, 14 अगस्त को स्वतंत्रता सेनानियों के स्मारकों पर माल्यार्पण किया जाएगा। पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला ने कहा कि भाजपा द्वारा 'हर घर तिरंगा' अभियान को जिले के सभी 1581 बूथों तक पहुंचाने के लिए जिला स्तर और मण्डल स्तर तक समितियों का गठन किया गया है। इसके साथ ही इस आयोजन को ऐतिहासिक एवं प्रभावी बनाने के लिए नवाचार करते हुए स्केटिंग तिरंगा यात्रा, बैलगाडी तिरंगा यात्रा, टेक्टर यात्रा सहित सारणी डैम में नाव पर तिरंगा यात्रा का आयोजन होगा। उन्होंने बताया कि इस अभियान में पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ-साथ पार्टी के सभी सांसद, विधायक, महापौर, जिला पंचायत और जनपद पंचायतों के अध्यक्ष, नगर पालिका और नगर परिषद के अध्यक्ष, पार्षद, सरपंच एवं समस्त जनप्रतिनिधि इसमें शामिल होंगे। आप सबसे आग्रह है कि अपने घर पर तिरंगा झंडा फहरा कर सोशल मीडिया पर फोटो शेयर करें।

बाइक सवार नाले में बहा, बमुश्किल बचाया गया

बैतूल। आठनेर में शनिवार की दोपहर बाइक से नाला पार कर रहा युवक बाइक समेत पुलिया में जा गिरा। गनीमत यह रही कि उसे चोट नहीं आई। युवक और उसकी बाइक का एक घंटे की मशक्कत के बाद रेस्क्यू किया गया। इस दौरान बारिश के चलते यह नाला उफान पर आ गया। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक आठनेर के हिड़ली रोड पर प्रधानमंत्री सड़क योजना के तहत बनी सड़क पर करीब 15 फुट ऊंची पुलिया बनाई गई है। इस पुलिया पर सुरक्षा के लिहाज से रेलिंग नही लगाई गई है। आज दोपहर तेज बारिश हुई तो यह नाला उफान पर आ गया। इस दौरान भैंसदेही रोड इलाके में रहने वाला 24 वर्षीय युवक धीरज घोरसे यहां अपनी बाइक से रपटा पार कर रहा था। इसी बीच वह अनियंत्रित होकर पुलिया से नीचे बाइक समेत जा गिरा। उसे गिरता देख लोगो ने पुलिया के पास दौड़ लगा दी। ग्रामीणों ने मौके पर पहुंचकर धीरज को रस्सियां फेंककर बचने के लिए सहारा दिया। वही उसकी बाइक बांधकर बाहर निकलवाया। इस दौरान नाले में पानी लगातार बढ़ता रहा। करीब एक घंटे की मेहनत के बाद लोगो ने युवक और उसकी बाइक को नाले से रेस्क्यू किया। बताया जा रहा है कि वार्ड-15 की पार्षद, पूनम प्रवीण चढोकार ने पुलिया पर रैली लगाने के लिए नगर परिषद को आवेदन दिया था जिस पर एस्टीमेट तैयार किया गया लेकिन कार्य नहीं हो सका।

जनजातीय क्रांतिकारी के नाम हो भैसदेही शासकीय कॉलेज का नामकरण, भैसदेही विधायक मुख्यमंत्री से करेगें मांग

बैतूल। 12 अगस्त को भैंसदेही दौरे पर आ रहे मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव से भैसदेही विधायक महेन्द्र सिंह चौहान विधानसभा क्षेत्र की जनता की समस्याओं के निराकरण और विकास से जुडी विभिन्न मांग करेंगे। भैसदेही विधायक द्वारा मुख्यमंत्री के आगमन पर उन्हें मांग पत्र सौपा जावेगा। जिसमें शासकीय

महाविद्यालय भैसदेही का नामकरण जनजातीय क्रांतिकारी के नाम से करने,मेढा जलाशय का पानी भैसदेही विधानसभा क्षेत्र के किसानो को उपलब्ध कराने सहित विधानसभा क्षेत्र के विकास से जुडी अन्य मांगे शामिल रहेगी। भैसदेही विधायक महेन्द्र सिंह चौहान ने बताया कि देश को आजादी दिलाने बैतूल जिले के बहुसंख्यक जनजातीय समाज के क्रांतिकारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।देश के स्वत्रंतता आंदोलन में अग्रेंजो से मुकाबला करते हुए अनेक जनजातीय क्रांतिकारियो ने अपनी जान गवा दी। देश की आजादी में बलिदान हुए जनजातीय क्रांतिकारियो की शहादत को अक्षुण रखने एवं नई पीढी के मार्गदर्शन के लिए मुख्यमंत्री से शासकीय महाविद्यालय भैसदेही का नामकरण जनजातीय क्रांतिकारी के नाम से करने की मांग करेगें।

मुख्यमंत्री से ये भी मॉग करेगें- भैसदेही विधायक श्री चौहान ने बताया कि मुख्यमंत्री के भैसदेही आगमन पर विधानसभा क्षेत्र में स्वास्थ्य ,शिक्षा ,कृषि ,सिचाई, आवागमन सुविधाओ से संबंधित विभिन्न मांगे की जावेगी । उन्होने बताया कि मुख्यमंत्री से भैसदेही में आदिवासी संस्कृति अध्ययन केन्द्र संग्राहालय स्थापित करने, चिल्हौर व खामला में नवीन हायर सेकेण्डरी स्कूल खोलने ,भैसदेही व भीमपुर विकास खण्डो में 100- 100 बेड सिविल अस्पताल शुरू करवाने तथा सभी कन्या हाईस्कूल व कन्या हायर सेकेण्डरी स्कूलो के अन्तर्गत कन्या आश्रम , कन्या छात्रावासो में सीट वृद्वि करने ,विकासखंड भैसदेही के गुदगाव में कृषि महाविद्यालय स्वीकृत करने ,विकास खण्ड भीमपुर के ग्राम मोहटा से नहरपुर मार्ग पर ताप्ती नदी पर ब्रिज निर्माण, मेढा सिचाई परियोजना से भैसदेही क्षेत्र के किसानो का पानी उपलब्ध करवाने , मकई, भीवापुर मांडू नदी पर डेम, ग्राम घोघरा से बोरपेड हिडली होते हुए सड़क मार्ग निर्माण तथा बैतूल जिले के सभी जलाशयो - सरोवरों का नामकरण स्वतंत्रता संग्राम सैनानियो के नाम पर करने की मांग मुख्यमंत्री से की जावेगी।

नागपंचमी पर हुआ चमत्कार

नागपंचमी पर्व पर नाग देवता भी शांत अवस्था में ग्रामीणों की पूजा स्वीकार करते नजर आए

बैतूल। खेड़ीसावलीगढ़ के ग्राम कुमली के पास आमला में ग्रामीणों ने साक्षात नागदेवता को दूध पिलाया और पूजा अर्चना की ग्रामीणों ने बताया की गांव के पास एक हल्दु के पेड़ के नीचे ग्रामीणों ने जब नागदेवता को देखा तो देखते ही देखते भीड़ उमड़ पड़ी और लोग नागराज को दूध पिलाने लगे और पवित्र नागपंचमी पर्व पर नागदेवता भी शांत अवस्था में ग्रामीणों की पूजा स्वीकार कर रहे थे लोगो ने उनके शरीर को छूकर हल्दी कुमकुम फूल और दूध आदि अर्पित किया यह नागदेवता को देखकर ऐसा लग रहा था की वे सिर्फ शांति पूर्वक पूजन करवाने ही आए थे फिर पूजन खतम होने के बाद वे उस स्थल से गायब हो गए किसी ने उन्हें जाते नही देखा ग्रामीणों ने उक्त स्थल पर नागदेवता का चबूतरा निर्माण करने के लिए तैयारी शुरू कर दी है।

विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने की घोषणा

शिवधाम सालबर्डी में 24 लाख रुपये की लागत से बनेगा सामुदायिक भवन

बैतूल/मुलताई। शिवधाम सालबर्डी, जो भगवान भोलेनाथ के प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है, में 24 लाख रुपये की अनुमानित लागत से 5,000 वर्ग फीट भूमि पर सामुदायिक भवन के निर्माण की घोषणा की गई है। यह घोषणा मुलताई विधानसभा के लोकप्रिय विधायक चंद्रशेखर देशमुख द्वारा की गई है। भाजपा के मीडिया प्रभारी राघवेंद्र रघुवंशी ने जानकारी दी कि सर्वमंगल कावड़ यात्रा समिति ने शिवधाम सालबर्डी में शिव भक्तों के ठहरने के लिए एक सामुदायिक भवन के निर्माण की मांग विधायक चंद्रशेखर देशमुख से की थी। इसके साथ ही, कई शिव भक्तों ने भी विश्राम की सुविधा के लिए इस समिति के माध्यम से अपनी जरूरतें व्यक्त की थीं। शिवधाम सालबर्डी में पूरे वर्ष भर श्रद्धालु भगवान भोलेनाथ के दर्शन करने के लिए आते रहते हैं। यहां स्थित गुफा में भगवान भोलेनाथ के शिवलिंग पर जल से अभिषेक करने के लिए कावड़ियों की यात्राएं भी होती रहती हैं। शिवधाम सालबर्डी में भक्तों के ठहरने और विश्राम करने की स्थाई व्यवस्था न होने की समस्या को कई शिव भक्तों ने विधायक चंद्रशेखर देशमुख के सामने रखा। इस वजह से, जो यात्री वहां एक या दो दिन ठहरना चाहते हैं, उन्हें भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

भगवान भोलेनाथ की कृपा से इस धर्मस्थल के आसपास प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत वातावरण है, जो पर्यटकों को दूर-दूर से आकर्षित करता है। भक्तों और पर्यटकों की इन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने शिवधाम सालबर्डी में एक सुव्यवस्थित सामुदायिक भवन के निर्माण की घोषणा की है। इस परियोजना के लिए शीघ्र ही स्थल का चयन किया जाएगा। सर्वमंगल कावड़ यात्रा समिति ने इस मांग को स्वीकार करने के लिए विधायक चंद्रशेखर देशमुख के प्रति आभार व्यक्त किया है।

सजाई बाबा अमरनाथ की मनमोहक झांकी

मुलताई। प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी दीप ऑटोमोबाइल बैतुल रोड ओकाया शोरूम में श्रावण मास के पवित्र महीने में भगवान भोलेनाथ की आकर्षक झांकी सजाई गई है।इस वर्ष बाबा अमरनाथ बर्फानी की आकर्षक झांकी सजाई गई है। जो एक सप्ताह तक यथावत रहेगी। श्रद्धालु भक्त बाबा अमरनाथ के दर्शन कर पुण्य लाभ ले सकते है। एक सप्ताह उपरांत झांकी विसर्जीत कर दी जाएगी।

मौसी के घर आई 14 वर्षीय बालिका को जबरदस्ती ले जाकर दुष्कर्म

कोतवाली थाने का मामला, अब 20 साल रहेगा जेल में

बैतूल। कोतवाली थाना अंतर्गत अपनी मौसी के घर आई एक नाबालिग के साथ जबरदस्ती ले जाकर दुष्कर्म करने वाले आरोपी को न्यायालय लेने 20 वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही उस पर 5000 का जुर्माना लगाया है। यह आदेश माननीय अनन्य विशेष न्यायालय, (पोक्सो एक्ट) 2012 बैतूल (म.प्र.) सुनाया हैं। आरोपी संतलाल उर्फ विराट 25 वर्ष को न्यायालय ने धारा 376(3) भादवि समाहित धारा पॉक्सो एक्ट में 20 वर्ष के कठोर कारावास एवं 5,000रू. के जुर्माने से दण्डित किया गया। प्रकरण में म.प्र. शासन की ओर से जिला तंचम अभियोजन अधिकारी एस.पी.वर्मा एवं सहायक जिला अभियोजन अधिकारी ओमप्रकाश सूर्यवंशी एवं अमित कुमार राय द्वारा पैरवी की गई। जिला अभियोजन कार्यालय बैतूल में पदस्थ सहायक ग्रेड-3 श्रीमती कविता शेषकर ने पैरवी संबंधी कार्य में सहयोग प्रदान किया।

घटना को लेकर मिली जानकारी के अनुसार पीड़िता ने कोतवाली में 1 जनवरी 2023 को रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि वह उसकी मम्मी और भाई के साथ मौसी के घर नया साल मनाने आई थी। इस दौरान रात 9 से 10 बजे जब वह बाथरूम के लिए गई तो उसे रोड पर आरोपी दिखाई दिया। आरोपी उसके पास आया और मुंह दबाकर जबरदस्ती वहां से यह करते हुए ले गया कि गांव के खाली मकान में चल उससे बात करना है। यहां पर आरोपी ने उसके साथ जबरदस्ती दुष्कर्म किया और वही अकेला छोड़कर भाग गया। डर की वजह से पीडित रात में घर नहीं पहुंची और सुबह घर जाकर उसने परिवार को पूरी जानकारी दी। पुलिस थाना कोतवाली में पदस्थ उपनिरीक्षक कविता नागवंशी ने प्रकरण का अनुसंधान किया। विवेचना के दौरान आरोपी को गिरफ्तार किया गया।

जिले की सभी स्वास्थ्य केन्द्रों में डेंगू एवं मलेरिया की निःशुल्क जांच

नरसिंहपुर। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी नरसिंहपुर डॉ एपी सिंह ने बताया कि ज़िले की समस्त प्राथमिक, सामुदायिक, उप स्वास्थ्य केंद्रों एवं सिविल अस्पताल में मलेरिया और डेंगू की निःशुल्क जाँच आरडीटी किट एवं हब एण्ड स्पोक मॉडल द्वारा की जा रही है। उन्होंने सभी जिले के नागरिकों से कहा कि वे बुख़ार से पीड़ित व्यक्ति अपनी मलेरिया व डेंगू की जाँच अवश्य करायें। जांच के दौरान रिपोर्ट पॉजिटिव आने पर शीघ्र ही निकटतम शासकीय स्वास्थ्य केंद्र में जाकर डॉक्टर से परामर्श लें।

मंत्री श्री सिंह होंगे तिरंगा यात्रा में शामिल

नरसिंहपुर। प्रदेश के परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह 11 अगस्त को गाडरवारा में तिरंगा यात्रा में शामिल होंगे। जारी दौरा कार्यक्रम के अनुसार मंत्री श्री सिंह रविवार 11 अगस्त को दोपहर एक बजे लोलरी से गाडरवारा के लिए प्रस्थान कर दोपहर दो बजे गाडरवारा आयेंगे। वे यहां तिरंगा यात्रा में शामिल होंगे। इसके पश्चात अपरान्ह 3 बजे चीचली में स्थानीय कार्यक्रम में शामिल होने के पश्चात सायं 4 बजे चीचली से व्हाया उदयपुरा, बरेली से होते हुए भोपाल के लिए प्रस्थान करेंगे।

स्वतंत्रता दिवस समारोह, दिल्ली में विशेष दर्शक के रूप में बैतूल का प्रतिनिधित्व करेंगी आजीविका मिशन से जुड़ी दो महिलाएं

बैतूल। बैतूल जिले की आजीविका मिशन से जुड़ी दो समूह की महिलाएं दिल्ली में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में विशेष दर्शक के रूप में उपस्थित होगी। उल्लेखनीय है कि दिल्ली में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में प्रदेश के 6 जिलों से उन 16 महिलाओं को आमंत्रित किया गया है, जो समूह से जुड़कर लखपति दीदी बनी है। इसमें बैतूल जिले के विकासखंड मुलताई के ग्राम पारड़सिंगा समूह मां दुर्गा स्व सहायता समूह की श्रीमती कल्पना बोडखे तथा विकासखंड बैतूल के ग्राम बडोरा सिद्धी विनायक स्व सहायता समूह की पूनम मासोदकर को आमंत्रित किया गया है।

ड्रोन संचालन, साबुन निर्माण पैकेजिंग से बनी लखपति दीदी

मां दुर्गा स्व सहायता समूह की कल्पना बोडखे ने समूह से जुडकर ऋण के माध्यम से उन्नत तकनीकी से कृषि कार्य को बढ़ावा दिया जा रहा है। साथ ही ड्रोन पायलट का प्रशिक्षण प्राप्त कर ड्रोन संचालन का कार्य कर रही है एवं साबुन निर्माण पैकेजिंग का कार्य किया जा रहा है, जिससे दीदी को औसतन 2.16 लाख रुपये वार्षिक आय प्राप्त हो रही है।

सिद्धी विनायक स्व सहायता समूह

सिद्धि विनायक स्व सहायता समूह की पूनम मासोदकर द्वारा गारमेंट निर्माण एवं विक्रय, बैंक कॉरस्पोंडेंस (बी.सी) पाइंट का संचालन एवं कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन (सीआरपी) के रूप में कार्य किया जा रहा है, जिससे दीदी को 3.40 लाख रुपए औसतन वार्षिक आय प्राप्त हो रही है। इस आमंत्रण से महिलाएं एवं परिवारजन उत्साहित हैं। इनकी सफलता की कहानी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी एवं मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव के लखपति दीदी संकल्प का साकार रूप है।

लाड़ली बहनों के खातों में राशि अंतरित रक्षाबंधन के लिए शगुन की राशि भी मिली

नरसिंहपुर। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में श्योपुर जिले के विजयपुर में स्वसहायता समूह सम्मेलन एवं रक्षाबंधन राज्य स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उन्होंने लाड़ली बहना योजना अंतर्गत प्रदेश की 1.29 करोड़ बहनों को 1,574 करोड़ से अधिक राशि का सिंगल क्लिक से अंतरण किया। इसी प्रकार मुख्यमंत्री ने सिंगल क्लिक के माध्यम से रक्षाबंधन के उपहार स्वरूप 322 करोड़ से अधिक राशि का सिंगल क्लिक से बहनों के बैंक खातों में अंतरित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राज्य स्तरीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना अंतर्गत जिले की 213450 महिलाओं को माह अगस्त 2024 में मासिक 1250 रुपये की 25 करोड़ 92 लाख 21 हजार रुपये और रक्षाबंधन के उपहार स्वरूप 250 रुपए प्रति महिला को 5 करोड़ 33 लाख 62 हजार 500 रुपये का अंतरण किया। इस तरह जिले की कुल 213450 महिलाओं को कुल 31 करोड़ 25 लाख 64 हजार 600 रुपये की राशि का वितरण किया गया।

इसी प्रकार मुख्यमंत्री ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के अंतर्गत जिले के एक लाख 21 हजार 113 हितग्राहियों को 7.30 करोड़ रुपये की राशि का सिंगल क्लिक के माध्यम से उनके बैंक खातों में अंतरित किया।नगर परिषद तेंदूखेड़ा में रक्षाबंधन एवं श्रावण उत्सव कार्यक्रम का आयोजन विधायक श्री विश्वनाथ सिंह पटेल की उपस्थिति में किया गया। कार्यक्रम में लाड़ली बहनों का पुष्प अर्पित कर स्वागत किया गया। लाड़ली बहनों ने विधायक को राखी बांधकर आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम में अध्यक्ष नगर परिषद तेंदूखेड़ा श्री विष्णु शर्मा व उपाध्यक्ष हेमलता डालचंद पटेल, श्री संतोष पटेल, श्री शिवदयाल खेरोनिया, अन्य जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक और बड़ी संख्या में लाड़ली बहनें मौजूद थी। कार्यालय नगरपालिका परिषद के बैठक कक्ष में में लाड़ली बहना राशि अंतरित, स्व सहायता समूह व रक्षाबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में राज्य स्तरीय कार्यक्रम को देखा व सुना। इस दौरान नगरपालिका अध्यक्ष श्री नीरज महाराज, उपाध्यक्ष श्री अजीत ठाकुर, श्रीमती निशा सोनी, श्रीमती सविता अग्रवाल, पार्षद श्री गुडडा साहू व श्री सौरभ ठाकुर, गणमान्य नागरिक मुख्य नगरपालिका अधिकारी श्री नीलम चौहान सहित महिला बाल विकास एवं नगरपालिका परिषद के अधिकारी- कर्मचारी, लाड़ली बहनें मौजूद थी।

पुल-पुलिया रेलिंग विहीन चंद्रभागा नदी के पुल पर बना रहता है हादसों का खतरा, प्रशासन मौन

बैतूल। आमला में लगातार बारिश हो रही है। बारिश से पुल-पुलियाओं पर कई बार बाढ़ जैसे हालात बनते है। लेकिन सुरक्षात्मक इंतजाम नहीं है। ऐसे में पुल-पुलिया पार करते समय हमेशा हादसों का अंदेशा लगा रहता है। खासकर बैतूल-बाँसखापा मार्ग की चंद्रभागा नदी के पुल पर रेलिंग तक नहीं है। खास बात यह है कि इस पुलिया की ऊंचाई भी कम है। थोड़ी सी बारिश होते ही पानी पुल पर आ जाता है। पुल-पुलिया पर खतरा उस समय और बढ़ जाता है जब इन पुलों और रपटो पर कम पानी होता है और लोग इन्हें पार करने की कोशिश करते है। रैलिंग न होने से बड़ा हादसा होने की संभावना बनी रहती है। गौरतलब रहे कि आपदा प्रबंधन, पुल-पुलियाओं पर रैलिंग और सुरक्षा के इंतजाम की बाते हर साल होती है, लेकिन यह सब कागजों तक सीमित रहती है। मौके पर न तो आपदा प्रबंधन के लोग मौजूद रहते है और न ही कोटवार, पुलिस कर्मी या प्रशासन द्वारा सुरक्षा की दृष्टि से मार्ग अवरूद्ध किया जाता है। यहीं वजह है कि हर साल बाढ़ में बहने जैसी घटनाएं सामने आती है और लोग अपनी जान गवा देते है।

इसी पुल से जिम्मेदार भी गुज़रते है रोजाना- ंसखापा मार्ग चंद्रभागा नदी के पुल से दर्जनों गांवों के लोगों का आवागमन है। जिसकी वजह से इस पुल पर यातायात का भारी दबाव बना रहता है। पुल से गुजरते समय छोटे-बड़े वाहन चालकों में हमेशा भय की स्थिति बनी रहती है। वर्षो से रेलिंग विहीन इसी पुल से ही जिम्मेदार आला अधिकारियों व जनप्रनिधियों भी गुजरते हैं, लेकिन अभी तक पुल के दोनों किनारों पर रेलिंग नहीं लगाई जा सकी है। सब कुछ जानते हुए भी जिम्मेदार लोग आवागमन की इस ज्वलंत समस्या को वर्षो से नजरअंदाज करते रहे हैं। जागरूक नागरिकों का कहना है कि पुल-पुलिया के दोनों ओर रेलिंग लगी होनी चाहिए, ताकि ऐसे हादसे न हो।

कई पुलों की हालत खराब- आमला ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्रों की पुल-पुलियाओं की हालत जर्जर और खस्ताहाल हो गई है। ऊंचाई कम और रेलिंग का अभाव है। जिससे अक्सर इन मार्गो पर जानलेवा दुर्घटनाएं होती है।

इन पुलों पर पानी होने के बावजूद भी लोग इन्हें पार करते है और पानी के बहाव में बहकर अपनी जान गवां देते है। हर साल इन मार्गो पर कोई न कोई जानलेवा हादसे होते है। लेकिन पुलिया पर सुरक्षा की दृष्टि से अब तक रैलिंग नहीं लगाई गई है। जबकि निगरानी के लिए कई पुल-पुलियाओं पर तैनाती भी नहीं रहती है। नागरिकों का कहना है कि निर्देशों के बाद भी लापरवाही बरतने वाले जिम्मेदारों पर कार्रवाई की जानी चाहिए।

इनका कहना

पुल-पुलिया में रेलिंग लगाने के लिए पीडब्ल्यूडी विभाग को निर्देशित किया जाएगा जल्द ही पुल-पुलिया पर सुरक्षा के इंतजाम भी किए जाएंगे।

-शैलेंद्र बडोनिया एसडीएम आमला

हर घर में गाय का होना जरूरी- अनंतमति माता जी

नरसिंहपुर। कंदेली स्थित जैन मंदिर जी में ससंघ विराजमान आर्यिका संघ के आर्शीवाद ओर प्रेरणा से भगवान नेमीनाथ के मोक्ष कल्याणक तिथि एवं आर्यिका रत्न 105 अनंत मति माता जी एवं शुक्लमति माताजी के 36 वे दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर विविध धार्मिक व सांस्कृतिक आयोजन किये गये। प्रातः से आत्मजिज्ञासुओं का तांता मंदिर जी में लगा। उपरांत प्रभात फेरी परिक्रमा की गयी। 7:15 बजे तीनों वेदियों पर भक्ति भाव से शांति धारा,730 बजे पंडाल में आचार्य विद्यासागर महाराज के तेल चित्र का अनावरण,चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन किया। माता जी द्वय के दीक्षा दिवस को संयम दिवस के रूप में मनाया।

नेमी कुमार की बारात का नगर भ्रमण- नेमी कुमार भगवान नेमी नाथ कैसे बने उक्त संदर्भ में नगर में नेमीकुमार की बारात निकाली गयी जिसका स्वागत जगह-जगह किया गया। ओर नेमीकुमार के पात्र बने बडभागी जनों के भाग्य की सराहना लोगों द्वारा की गयी। इस अवसर बड़ी संख्या में लोगों उपस्थिति उल्लेखनीय रही। जैन दर्शन के अनुसार श्रीकृष्ण के भगवान नेमीनाथ चचेरे भाई थे।

नाटिका से अंतर चेतना के भाव जाग्रत हुए- नेमी कुमार के वैराग्य ओर राचुल के विछोह की प्रेरक प्रस्तुति ने लोगों का मन मोह लिया। पात्रों की जीवंत अभिनय ने उपस्थित जनों के मन में इस भवसागर से पार होने की भावना जाग्रत हुयी। बारात लगने के समय जब नेमी कुमार ने आये हुए मेहमानों के लिये जानवरों के काटे जाने का क्रंदन सुना तो उनके अंतर मन में इस संसार से मुक्त होने का भाव जाग्रत हो उठा। इस प्रसंग को पात्रों ने बढ़े रोचक ढंग से मंचित किया।

दीक्षा दिवस,संयम दिवस के रूप में मनाया- आर्यिका रत्न अनंत मति माता जी ने दीक्षा दिवस ओर भगवान नेमीनाथ की मोक्ष कल्याण तिथि पर उपस्थित जनों से कहा कि संयम ओर संकल्पित जीवन कल्याण का आधार है सभी को शाकाहार लिये प्रेरित करना है हर घर में गाय का होना जरूरी है गाय ही श्री लक्ष्मी का रूप है, सुख ओर समृद्वि का प्रतीक है गुरू के उपकार के कारण हम कल्याण पथ पर आगे बढ़ रहे हैं गुरू चरण,शरण,रास्ता देता ओर संभालता है। उन्होंने कहा कि नेमी कुमार जैसा भाव अपने मन ओर आचरण में लाना है जिससे आत्मा का कल्याण हो जाये। भगवान की आरती,आचार्य विद्यासागर महाराज पर वृत चित्र प्रसारित किया गया। प्रेरक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

'नागिन' बनने की आस लगाए ये 9 हसीनाएं

एकता कपूर के 'नागिन' सीरियल ने टीवी पर हमेशा दर्शकों की अच्छी प्रतिक्रिया हासिल की है। इस शो का हर सीजन टीवी पर हिट रहा है। 'नागिन-6' के खत्म होने पर एकता कपूर ने इस सीरियल के 7वें सीजन का भी हिंट दिया था। हाल ही में इस शो को लेकर नई अपडेट सामने आई। एकता कपूर एक्ट्रेस आयशा सिंह और कनिका मान से नए प्रोजेक्ट के लिए बातचीत कर रही हैं।

एकता कपूर का सीरियल 'नागिन' टीवी इंडस्ट्री में हिट है। इस शो के 6 सीजन आ चुके हैं और सभी को काफी पसंद किया गया। 'नागिन' के कई सीजन टीआरपी में धमाल मचा चुके हैं और अब फैंस को नागिन-7 का इंतजार है। पहले रिपोर्ट में दावा किया जा रहा था कि नागिन-7 साल 2024 के आखिर तक शुरू हो जाएगा। लेकिन, अब कहा जा रहा है कि ये शो साल 2025 के लिए शिफ्ट हो गया है। मेकर्स इस शो को अगले साल लेकर आएंगे। एकता कपूर के इस शो के लिए कई एक्ट्रेस को अप्रोच किया गया, जो नागिन बनने का सपना देखने लगी थीं।

अंकिता लोखंडे टीवी शो लाफ्टर शेफ में नजर आई। इससे पहले एक्ट्रेस की एंट्री नागिन-7 में पक्की मानी जा रही थी। अंकिता का नाम इस शो के लिए कई मीडिया रिपोर्ट्स में कंफर्म भी कर दिया था। लेकिन, अब नहीं लगता कि वे नागिन की भूमिका में दिखाई देंगी। कनिका मान टीवी की खूबसूरत एक्ट्रेस हैं, जो सीरियल 'गुड्डन तुमसे ना हो पाएगा' में नजर आई थीं। बीते दिनों ही खबर आई थी कि मेकर्स ने कनिका नाम को शो के लिए अप्रोच किया। हालांकि, अब शो आगे खिसकने पर कनिका के हाथ से ये प्रोजेक्ट निकल गया।

अर्चना गौतम बिग बॉस और खतरों के खिलाड़ी से अच्छी खासी पॉपुलर हो गई हैं। अर्चना गौतम का नाम नागिन से जुड़ा था। उनका फेनमेड पोस्टर तक वायरल हुआ। निमृत कौर आहलूवालिया का नाम भी इसी लिस्ट में हैं, जो जल्द ही खतरों के खिलाड़ी 14 में नजर आएंगी। निमृत का नाम नागिन-7 से जुड़ चुका है। दर्शक भी उन्हें नागिन में देखना चाहते हैं, लेकिन शो पोस्टपोन होने से एक्ट्रेस का ये सपना टूट गया। टीवी एक्ट्रेस सुम्बुल इन दिनों सीरियल काव्या एक अजूबा एक जुनून में नजर आ रही हैं। कुछ समय पहले कहा जा रहा था कि सुंबुल एकता कपूर की नई नागिन बन सकती हैं। इस खबर ने फैंस को भी खुश कर दिया था। सुंबुल ने अपना क्यूट नागिन लुक भी शेयर किया था।

प्रतीक्षा होनमुखे 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' में नजर आई थीं। एक्ट्रेस ने खुद नागिन-7 में आने की इच्छा जताई थी। प्रतीक्षा ने खुलासा किया था कि वह नागिन शो करना चाहती हैं। हालांकि, ऐसा जल्दी होता नहीं दिख रहा। प्रियंका चाहर चौधरी इन दिनों म्यूजिक वीडियो में बिजी हैं। बिग बॉस 16 में प्रियंका नजर आई थीं। इस शो के बाद कहा जा रहा था कि प्रियंका को नागिन ऑफर हुआ है। हालांकि, शो में अब प्रियंका की एंट्री होगी या नहीं, ये तो साल 2025 में पता चलेगा। रिद्धिमा पंडित सीरियल बहू हमारी रजनीकांत से पॉपुलर हुई थीं। इसके बाद वह किसी बड़े शो में नजर नहीं आईं, लेकिन रिद्धिमा का नाम कई मीडिया रिपोर्ट्स में सामने आया। एक्ट्रेस खुद नागिन 7 में एंट्री की इच्छा जता चुकी हैं।

जया को पसंद नहीं अमिताभ का नाम जुड़ना

फिल्म इंडस्ट्री की दिग्गज एक्ट्रेस और सांसद जया बच्चन अपने गुस्से को लेकर खबरों में छाई रहती हैं। जया कई बार अपने बड़बोलेपन की वजह से ट्रोल भी होती हैं। हाल ही में राज्यसभा में जया बच्चन स्पीकर हरिवंश नारायण से भिड़ गईं, जिसका वीडियो इंटरनेट पर तेजी से वायरल हुआ। हरिवंश नारायण जया को 'जया अमिताभ बच्चन' कहकर बुलाते हैं, जिसे लेकर सांसद बुरी तरह से चिढ़ जाती हैं। वीडियो में जया बच्चन कह रही हैं 'सर आप सिर्फ जया बच्चन बोलते तो काफी हो जाता।'

वीडियो में देखा जा सकता है कि जया बच्चन की टिप्पणी के बाद राज्यसभा स्पीकर कहते हैं, 'यहां आपका यही पूरा नाम लिखा हुआ है तो इसलिए मैंने यही रिपीट किया।' हरिवंश नारायण की बात सुनकर जया बच्चन आगे कहती हैं 'ये जो कुछ नया तरीका निकला है कि महिलाएं अपने पति के नाम से जानी जाएंगी, उनका कोई अस्तित्व नहीं है। उनकी कोई उपलब्धि नहीं है अपने में।' जया बच्चन की बात सुनकर स्पीकर कहते हैं 'आपकी बड़ी विशिष्ट उपलब्धि है!' जया बच्चन के इस वीडियो को सोशल मीडिया पर धड़ल्ले से शेयर किया जा रहा है।

जया बच्चन के इस वीडियो पर लोग खूब कमेंट कर रहे हैं और अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। एक यूजर ने लिखा 'हमें अब पता चला कि अमिताभ बच्चन 81 साल की उम्र में भी इतना काम क्यों कर रहे हैं। वह बस इससे दूर रहना चाहते हैं। वहीं एक दूसरे यूजर ने लिखा 'यह हमेशा बहस करने के मूड में रहती है। यहां तक कि बिना सिर-पैर की बातों पर भी ये बहस कर सकती है।' जया बच्चन को ट्रोल करते हुए एक और यूजर ने लिखा 'इस नाम से किसी को तकलीफ है तो किसी ने ये नाम पाने के लिए अपनी पूरी जिंदगी निकाल दी।'

रियल बॉक्स

कई बार दोहराए गए कुछ फिल्मों के टाइटल!

हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

दर्शकों को फ़िल्में जिस भी तरीके से आकर्षित करती है, उसके पीछे कई कारण होते हैं। फिल्म का कथानक, कलाकार और डायरेक्टर के अलावा पहला आकर्षण होता है फिल्म का नाम! ये नाम ही दर्शकों को इस बात का संकेत देता है कि फिल्म का कथानक किस विषय पर केंद्रित है। इस बात पर भले विश्वास न किया जाए, पर फिल्मों के नाम का फिल्म इतिहास में अपना अलग ही महत्व है। इतना ज्यादा कि कई फ़िल्में एक ही नाम से तीन-चार बार नहीं आठ बार तक बनाई गई। इसलिए कि फिल्म के कथानक को ये टाइटल इतने ज्यादा सटीक लगे, कि उसी को दोहराया गया। आज के दौर में फिल्मकार अपनी फिल्मों के कुछ अलग और हटकर नाम रखने की कोशिश करते हैं, ताकि उनकी फिल्म सबसे अलग लगे। लेकिन, फिर भी कुछ टाइटल ऐसे हैं, जिनका लोभ हमेशा बना रहा। समय के साथ टाइटल में बदलाव का रिवाज भी देखने को मिलता है। कभी टाइटल बहुत लंबे तो कभी बहुत छोटे रखे जाते रहे। ये ट्रेंड पर निर्भर है कि उस दौर के दर्शक क्या पसंद करते हैं। फिल्म इंडस्ट्री में 'सलीम लंगड़े पे मत रो' और 'अलबर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है' जैसे लम्बे-लम्बे टाइटल रखे गए तो 'पा' जैसे नाम की फिल्म भी आई।

फिल्मकारों ने एक नाम से तीन या चार बार तो फिल्में बनाई। पर, एक नाम ऐसा है, जिस पर आठ बार फिल्म बनी है। न सिर्फ हिंदी में बल्कि बांग्ला, तमिल तेलुगु और उर्दू में भी 'देवदास' फिल्म बनाई गई। इस फिल्म की सबसे अनोखी विशेषता है, कि हर बार एक ही कहानी को दोहराया गया। शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास 'देवदास' पर इतनी बार फ़िल्में बनी है कि उसका रिकॉर्ड शायद ही कभी टूटे। 1917 में लिखे गए इसी उपन्यास पर आठ बार फिल्म बनी। 1928 में पहली बार इस उपन्यास पर नरेश सी मित्रा ने मूक 'देवदास' बनाई थी। नरेश सी मित्रा खुद ने खुद भी एक्टिंग की थी। जबकि, 'देवदास' का किरदार फानी बर्मा ने निभाया था। 1935 में पीसी बरुआ ने बंगाली और हिंदी भाषाओं में 'देवदास' बनाई। ये पहली बोलती 'देवदास' कही जा सकती है। पीसी बरुआ ने बंगाली में बनी 'देवदास' में मुख्य किरदार निभाया था। जबकि, हिंदी में केएल सहगल 'देवदास' बने थे। फिल्म जबरदस्त हिट हुई थी, पर आज इस फिल्म का कोई प्रिंट उपलब्ध नहीं हैं। तीसरी बार 1953 में बनी 'देवदास' तेलुगू और तमिल में वेदान्तम राघावैया ने बनाई थी। इसमें 'देवदास' की भूमिका नागेश्वर राव की थी। दोनों फ़िल्में बेहद सफल रही थीं।

हिंदी में दिलीप कुमार वाली चौथी 'देवदास' 1955 में पीसी बरुआ ने ही बनाई। तब उनकी इस फिल्म के कैमरे का काम बिमल रॉय ने संभाला था। फिल्म के किरदार से उन्हें इतना लगाव हो गया था कि बाद में उन्होंने भी 'देवदास' बनाई। बिमल रॉय ने इस फिल्म में ट्रेजेडी किंग दिलीप कुमार को देवदास बनाया। वैजयंती माला चंद्रमुखी और सुचित्रा सेन ने पार्वती की भूमिका निभाई थी। पांचवी बार 'देवदास' 1965 में उर्दू में बनाई गई। इसका निर्देशन ख्वाजा सरफराज ने किया था। छठी बार 'देवदास' 1979 में बांग्ला में बनी जिसमें मुख्य भूमिका सौमित्र चटर्जी ने की थी। इसे दिलीप रॉय ने बनाया और उत्तम कुमार ने चुन्नी बाबू का रोल निभाया था। शक्ति सामंत ने 2002 में बंगाली में 'देवदास' को फिर बनाया। इसमें प्रसनजीत, तापस पॉल और इंद्राणी हलदर मुख्य भूमिका में थे। आठवीं बार इसे संजय लीला भंसाली ने 2002 में बड़े कैनवस पर शाहरुख़ खान को 'देवदास' बनाकर बनाया। इसमें माधुरी दीक्षित और ऐश्वर्या राय भी थी। ये हिंदी में बनी पहली रंगीन 'देवदास' है।

इसके बाद फेमस टाइटल आता है 'अंदाज' जिस पर चार बार फ़िल्म बनी और अपने समय काल के दर्शकों ने पसंद भी किया। इस टाइटल से पहली बार 1949 में फिल्म बनी, जो रिलीज होने के साथ ही छाई थी। इस रोमांटिक फिल्म का निर्देशन महबूब खान ने किया था और इसमें नरगिस, दिलीप कुमार और राज कपूर मुख्य भूमिकाओं में थे। इसके बाद 'अंदाज' 1971 में बनाई गई। यह भी रोमांटिक फिल्म थी, जिसका डायरेक्शन रमेश सिप्पी ने किया। इसे चार लेखकों सलीम-जावेद, गुलजार और सचिन भौमिक ने लिखा था। 1994 में डेविड धवन की इसी नाम से बनी फिल्म में एक्शन कॉमेडी थी। इसमें अनिल कपूर, जूही चावला, करिश्मा कपूर और कादर खान थे। आखिरी बार 'अंदाज' 2003 में बना, जिसे राज कंवर ने निर्देशित और सुनील दर्शन ने बनाया था। इसमें अक्षय कुमार, लारा दत्ता और प्रियंका चोपड़ा थे। एक और फिल्म है, जो चार बार एक ही टाइटल से बनी। ये है 'किस्मत' जिसका पहली बार 1943 में ज्ञान मुखर्जी ने उपयोग किया। इसमें अशोक कुमार और मुमताज शांति ने काम किया था। ये फिल्म बार-बार बनी लेकिन, पहली बार को छोड़कर तीनों बार इसे दर्शकों ने नकार दिया। पहली बार की

सफलता के बाद 1968 में फिर 'किस्मत' नाम फिल्म बनाई गई। इसे मनमोहन देसाई ने निर्देशित किया था। ये रोमांटिक सस्पेंस थ्रिलर फिल्म थी जिसमें विश्वजीत चटर्जी, बबीता कपूर, हेलेन और कमल मेहरा ने अदाकारी की थी। 1995 में फिर 'किस्मत' नाम से फिल्म बनी जिसका निर्देशन हरमेश मल्होत्रा ने किया। चौथी बार 2004 में इसी टाइटल का उपयोग करके गुड्डू धनोआ ने 'किस्मत' बनाई। ये एक्शन फिल्म थी, जिसमें बॉबी देओल और प्रियंका चोपड़ा मुख्य भूमिका में थे।

'आंखे' भी ऐसा ही टाइटल है जिस पर तीन बार फ़िल्म बनी और हर बार हिट रही। पहली बार 1968 में बनी 'आंखे' का निर्माण और निर्देशन रामानंद सागर ने किया था। यह जासूसी थ्रिलर फिल्म थी। इसमें धर्मेंद्र, माला सिन्हा, महमूद अहम रोल में थें। इसे कई देशों में शूट किया गया था और बेरूत में शूट की गई पहली हिंदी फिल्म थी। दूसरी बार 'आंखें' 1993 में बनी जो गोविंदा की सुपरहिट फिल्मों में एक गिनी जाती है। यह एक्शन-कॉमेडी फिल्म थी, जिसे डेविड धवन ने बनाया। इसमें गोविंदा के साथ चंकी पांडे भी लीड रोल में थे और दोनों ही डबल रोल में नजर आए। बाद में इसे तेलुगु में 'पोकिरी राजा (1995)' के नाम से बनाया गया। तीसरी बार 'आंखें' 2002 में बनाई गई जिसमें अमिताभ बच्चन, अक्षय कुमार और अर्जुन रामपाल ने अभिनय किया। इस फिल्म को उसकी अनोखी कहानी की वजह से दर्शकों ने पसंद किया।

'जेलर' भी एक ऐसा टाइटल है जो तीन बार उपयोग किया गया। सबसे पहले 1938 में 'जेलर' फिल्म बनी। इसे सोहराब मोदी ने बनाया था। फिल्म में सोहराब मोदी, लीला चिटनिस, सादिक अली मुख्य भूमिकाओं में थे। इसी टाइटल से 1958 में फिर फिल्म बनाई गई। यह 1938 में आई पहली 'जेलर' की रीमेक थी। इसे फिर सोहराब मोदी ने ही निर्देशित किया था। इसकी कहानी और संवाद भी कमाल अमरोही ने ही लिखे थे। सोहराब मोदी ने एक बार फिर खुद को जेलर की मुख्य भूमिका में ढाला था। फिल्म में कामिनी कौशल, गीता बाली, अभि भट्टाचार्य थे। 1938 और 1958 के बाद 2023 में इसी नाम से रजनीकांत की 'जेलर' बनी। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर इतिहास बना डाला। इसमें रजनीकांत के साथ विनायकन, राम्या कृष्णन और वसंत रवि हैं।

एक ही टाइटल 'जिद्दी' से भी तीन बार फिल्म बनी। पहली बार 1948 में शाहिद लतीफ ने निर्देशन में बनी, जिसमें देव आनंद मुख्य भूमिका में थे। 1964 में प्रमोद चक्रवर्ती ने 'जिद्दी' बनाई जिसमें जॉय मुखर्जी, आशा पारेख और महमूद ने भूमिकाएं निभाई थी। तीसरी बार 'जिद्दी' 1997 में बनी, जिसमें सनी देओल मुख्य भूमिका में और रवीना टंडन फिल्म की अभिनेत्री थी। 2008 में आई फिल्म 'रेस' नाम से भी तीन फिल्में आ चुकी हैं। लेकिन, पहली फिल्म जैसी बाद की दोनों फ़िल्में नहीं चली। तीसरी में तो सलमान खान नजर आए थे। 'शानदार' भी एक ऐसा ही नाम है जिस पर अब तक तीन बार फिल्म बन चुकी। पहली बार फिल्म कब बनी इसका उल्लेख नहीं मिलता। लेकिन, दूसरी बार 1990 में जो 'शानदार' रिलीज हुई उसमें मिथुन चक्रवर्ती, मीनाक्षी शेषाद्रि और जूही चावला थे। 2015 में विकास बहन ने एक बार 'शानदार' टाइटल का उपयोग करके शाहिद कपूर और आलिया भट्ट को लेकर फिल्म बनाई जो बुरी तरह फ्लॉप रही।

एक टाइटल से दो बार बनने वाली कई फ़िल्में हैं। फिल्म 'लहू के दो रंग' भी टाइटल से दो बार बनी। 1979 में आई फिल्म के निर्देशन की कमान महेश भट्ट ने संभाली थी। इसमें विनोद खन्ना, शबाना आज़मी और डैनी नजर आए थे। इसमें विनोद खन्ना ने दोहरी भूमिका थी। इसके बाद साल 1997 में अक्षय कुमार और करिश्मा कपूर को लेकर भी 'लहू के दो रंग' बनी। पर, ये खास प्रदर्शन नहीं कर पाई। 2009 में आई दीपिका पादुकोण और सैफ अली खान की फिल्म 'लव आजकल' को दर्शकों ने पसंद किया था। दूसरी बार बनी 'लव आजकल' में सारा और कार्तिक आर्यन नजर आए थे, जिसे खास सफलता नहीं मिली।

'कुली नंबर वन' में गोविंदा और करिश्मा कपूर की हिट जोड़ी ने धमाल मचा दिया था। इसी नाम से आई वरुण धवन और सारा अली खान की फिल्म कमाल नहीं दिखा पाई। सलमान खान की 'जुड़वां' ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी। जबकि वरुण धवन और जैकलीन फर्नांडिस, तापसी पन्नू की 'जुड़वां-2' नापसंद कर दी गई। 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' सिद्धार्थ मल्होत्रा, आलिया भट्ट और वरुण धवन की डेब्यू फिल्म थी। इसके दूसरी पार्ट में टाइगर श्रॉफ, अनन्या पांडे और तारा सुतारिया नजर आए। यंग यूथ पर बेस्ड ये लव स्टोरी पहली फिल्म के मुकाबले एवरेज साबित हुई। अभी ये सिलसिला रुका नहीं है। आगे भी एक ही टाइटल पर बार-बार आगे भी फ़िल्में बनती रहेंगी।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

हिंदी सिनेमा का हिट फार्मूला है देश भक्ति

अशोक जोशी

देश प्रेम सिनेमा का टेस्टेड फार्मूला है, जो अक्सर सफल रहा। बदलते वक्त की फिल्मों में देश प्रेम के मायने बदलते रहे। आजादी के पहले ऐसी फिल्मों में ब्रिटिश शासन को निशाने पर रखा जाता था। उस समय सेंसरशिप सख्त होने के कारण वह सीधे सीधे तो अंग्रेजों पर हमला

नहीं कर सकते थे। लेकिन, ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिंदी फिल्मों ने स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन किया। कवि प्रदीप का लिखा गीत दूर हटो ए दुनिया वालों हिन्दुस्तान हमारा है, प्रासंगिक है, जिन्होंने विश्व युद्ध को आधार बनाकर यह गीत लिखकर अंग्रेजी शासन को धोखा देकर कहा था कि 'हिन्दुस्तान हमारा' अर्थात ब्रिटिश शासन का है।

आजादी के बाद एक-दो दशक तक बनने वाली देशभक्ति पूर्ण फिल्मों में स्वतंत्रता संग्राम के किस्सों को दोहराया गया। इन फिल्मों में दिलीप कुमार की 'शहीद' प्रमुख थी। उन दिनों शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद और झांसी की रानी ऐसे प्रमुख चरित्र थे, जिन्हें केन्द्र में रखकर सैल्यूलाइड पर देश प्रेम के रंग भरे गए। 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद एक दौर ऐसा जरूर आया, जब चेतन आनंद ने इस विषय पर हकीकत जैसी सार्थक फिल्म बनाई। इसके बाद देश प्रेम के नाम पर जो कुछ परोसा गया, उसमें देश प्रेम की भावना करीब करीब नदारद रही।

भगत सिंह के चरित्र पर आधारित फिल्म 'शहीद' की सफलता ने मनोज कुमार को फिल्में हिट करने का एक फार्मूला जरूर दे दिया, जिसे वह अपनी लगभग सभी फिल्मों में भुनाते रहे। मनोज कुमार ने देश भक्ति के नाम पर जो परोसा उसमें देश भक्ति कम और दूसरे मसाले ज्यादा थे। लेकिन, मनोज कुमार ने उसे देशभक्ति की चाशनी में लपेटकर जिस तरह से उसे दर्शकों के सामने परोसा, उससे वे बॉलीवुड के भारत कुमार बन गए। बेशक उनकी फिल्म 'उपकार' लालबहादुर शास्त्री के नारे 'जय जवान जय किसान' पर आधारित थी। लेकिन, मूल रूप से यह दो भाईयों के बीच जमीन के बंटवारें को लेकर बनी थी। इसमें देश भक्ति के जज्बातों के साथ गुलाबी रात का गुलाबी पैबंद भी लगाया गया था।

उसके बाद मनोज कुमार ने 'पूरब पश्चिम' से लेकर रोटी कपडा और मकान, शोर और 'क्रांति' जैसी फिल्मे जरूर बनाई। लेकिन, वह देशभक्ति पूर्ण कम और देशभक्ति की चाशनी में कमाई के मसालों से भरपूर फ़िल्में थी। इनमें बलात्कार के लम्बे-लम्बे दृश्य से लेकर पानी

में भीगती नायिका का अंग प्रदर्शन सब कुछ था। इसके बावजूद दर्शक उन्हें लम्बे समय तक एक देशभक्त फिल्मकार के रूप में देखते रहे। इस दौर के बाद देशभक्ति के नाम से जितनी फिल्में दर्शकों को परोसी गई उसमें

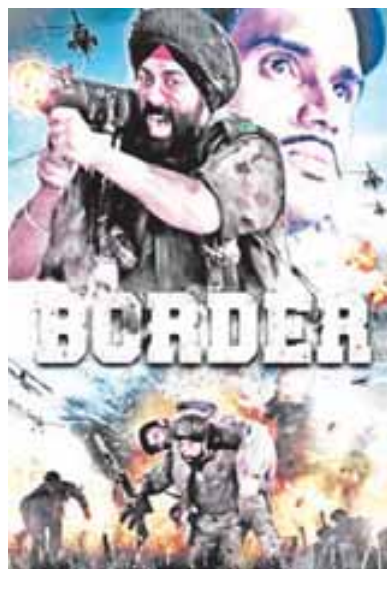

फिल्मकारों ने एक ही बात ध्यान में रखी कि दर्शक की भावनाओं को यदि किसी विषय से भड़का कर अपनी झोली भरी जा सकती है तो वह है पाकिस्तान का विरोध या उसे शिकस्त देने वाले प्रसंग या जज्बाती डायलॉग। जिन पर दर्शक तालियां मारता हुआ सिनेमा हाल से बाहर निकले।

जेपी दत्ता ने भारत और पाकिस्तान युद्ध पर आधारित 'बॉर्डर' का निर्माण किया। सितारों से भरपूर इस फिल्म में भी पाकिस्तान को शिकस्त के प्रसंग को भुनाने की कोशिश की गई। इसे कुछ हद तक हकीकत की शैली में बनाने का प्रयास किया गया। यहां तक गीतकार जावेद अख्तर ने 'संदेसे आते हैं' में अपने ससुर कैफी आजमी की नकल कर हकीकत में उनके लिखे गीत 'हो के मजबूर मुझे उसने भुलाया होगा' को ही आगे बढ़ाया है। कथित देश भक्ति के नाम पर इन दिनों बनाई जाने वाली फिल्मों का एक ही लक्ष्य होता है, जितना हो सके पाकिस्तान की फजीहत दिखाई जाए और दर्शकों की जेब से पैसा निकाला जाए।

निर्माता निर्देशक अनिल शर्मा ने सनी और अमीषा पटेल को लेकर बनाई अपनी फिल्म 'गदर' एक प्रेम कथा में 'हिन्दुस्तान जिंदाबाद

था, हिन्दुस्तान जिन्दाबाद है और हिन्दुस्तान जिन्दाबाद रहेगा' जैसे डायलॉग डालकर फिल्म को सफल बनाने में कामयाबी पायी थी। यही नहीं गदर का यह फार्मूला उसके दूसरे सिक्वेल में भी कामयाब रहा। आमिर खान की 'सरफरोश' में भी देशभक्ति की वही चाशनी थी। एक मुस्लिम पुलिस इंस्पेक्टर पर शक किए जाने के प्रसंग और पाकिस्तान से संबंध जोडकर इसे भी सफलता के दरवाजे से पार करवा दिया गया।

भाजपा शासन में अक्षय कुमार को भारत कुमार की पदवी मिली। उनकी फिल्मों में देशभक्ति की चासनी के साथ साथ पाकिस्तान को कोसने की कला बदस्तूर जारी है। यहां तक कि 'रुस्तम' जैसी फिल्म में भी देशभक्ति की चाशनी घोल दी गई। जबकि। इससे पहले इसी विषय पर बनी फिल्म 'यह है रास्ते के' में देश भक्ति का कोई राग नहीं अलापा गया था। हो सकता है इसी कारण वह दर्शकों को खींच नहीं पायी। जबकि 'उरी' और 'राजी' में पाकिस्तान विरोधी फार्मूला एक बार फिर कामयाब रहा। इसी तरह कारगिल युद्ध को भी फिल्मकार कुछ हद तक भुनवाने में सफल रहे।

भारतीय युवाओं में क्रिकेट से लेकर राजनीति हर क्षेत्र में पाकिस्तान से आगे रहने और उसे पराजित करने की भावना कहीं न कहीं छिपी हुई है। इन दबी भावनाओं को उभारने में फिल्मकारों को महारत हासिल है। इसलिए वह जाने अनजाने फिल्मों में पाकिस्तान को ठूंसकर देशभक्ति की चाशनी में डुबोकर देश भक्ति के नाम पर धडाधड फिल्में बना रहे हैं। इस तरह हॉल में तालियां और बॉक्स ऑफिस पर पैसा बटोर रहे हैं। लगता है बॉलीवुड के फिल्मकारों का एक सूत्रीय देश प्रेम पाकिस्तान विरोध तक ही सीमित बनकर रह गया है ! और जिस तरह का माहौल भारत और आसपास के देशों में चल रहा है ,उसे देखकर तो यही कयास लगाया जा सकता है कि यह फार्मूला आने वाले कई सालों तक जारी रहेगा।

छूटती कहां है, ये कमबख्त, मुंह की लगी!

प्रकाश पुरोहित

जब भी आप 'यहां' पढ़ें तो पेरिस ही समझें। बड़ा ही मनहूस-सा शहर है। यहां एक हफ्ते से ज्यादा हो गया, कोई फड़कता-सा नजारा ही देखने को नहीं मिला। हम अपने इंदौर के विजय नगर से पलासिया तक भी चले आएं तो ऐसे दृश्य उभर ही आते हैं कि दिल करे थोड़ी देर रुक कर मनोरंजन कर लें.... ! और कुछ नहीं तो 'अबे, ओए, बताऊं क्या अभी', 'चल-चल अपना काम कर', 'तू जानता नहीं है, मैं कौन हूं' जैसे आत्मीय संवाद तो चलते रस्ते सुन सकते हैं। थोड़ा धीमे चलें तो मल्लयुद्ध भी नजर आ सकता है, वजह साइड नहीं दी, गाड़ी टच हो गई या हॉर्न नहीं बजाया, हार्न क्यों बजाया, एकदम सामने आ गया या गाड़ी पार्क कर दी या घूर कर ही देख लिया। वजह का कोई मतलब नहीं है, बस हमारा खौलता हुआ खून बाहर आने या निकलने को बेकरार रहता है। इस नजरिए से कह रहा हूं कि बड़ा ही नीरस शहर है यहां। इंसान रहते हैं या रोबोट, कई बार शक होने लगता है।

ऐसा नहीं कि सिर्फ यहीं के नागरिक बोदे हैं, हमारे अपने वाले भी इनकी सोहबत में इन जैसे ही हो गए हैं। हमारा तो मूल चरित्र कभी ऐसा शरीफों वाला नहीं रहा। ऐसा लग रहा है, जैसे किसी ने मां कसम डाल दी हो। हंसते-मुस्कराते, नाचते-गाते और खाते-पीते भी ना कोई कहासुनी और ना कोई झगड़ा-झंझट। यहां तक कि मोदी को लेकर कोई बहस भी नहीं, वरना इतनी देर में तो दो गुट बन गए होते अपने यहां। ये अपने लोग बदनाम कर रहे हैं खुद को मेरी नजर में। इतनी शराफत तो अपने देश में नजर नहीं आती। कहां से बिगाड़ ली आदत कि बेजा हरकतों से तो विदेशी ही लगने लगे हैं, बल्कि विदेशी से भी ज्यादा विदेशी... !

सोच कर मुझे बेचैनी होने लगी कि ये बेचारे अंदर ही अंदर कितना तो कसमसा रहे होंगे, अपने आप को जब्त कर रहे होंगे, गजब का संयम ! यहां तक कि जिद करते बच्चे को एक चनकट तो क्या, जोर से डांट भी नहीं। चोर, चोरी से जाए, लेकिन हेराफेरी से कहां बाज आता है, मगर यहां तो रत्नाकर भी जैसे वाल्मीकि हो गए या सांप का गिंडोला-काया प्रवेश हो गया हो।

मेट्रो स्टेशन पर ट्रेन के बारे में सामने खड़े शख्स से पूछा। ये जनाब बलवीर सिंह, पंजाब के रहने वाले हैं और पच्चीस साल से पेरिस में हैं, पांच-छह मकान और अपना खुद का घर है। बड़ा लड़का कॉलेज में पढ़ाता है और छोटा इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा है। साल-दो-साल में एक बार पंजाब जाते हैं। खुद यहां ठेकेदारी करते हैं। घर में चार कारें हैं, एक महंगी भी, लेकिन आज भी मेट्रो पसंद है और पैदल ही चलते हैं। साठ पार हैं, लेकिन कोई बीमारी नहीं। अब ये बातें इतिहास की किताब में तो दर्ज हैं नहीं, 'चाय तो पीनी ही पड़ेगी आपको मेरे साथ, इनकार मत करिएगा, दिल टूट जाएगा', कहते हुए बलवीर सिंह ने मेरा हाथ जो पकड़ा तो ठिए पर भी नहीं छोड़ा। चाय आने के दौरान अपनी जिंदगी के ना जाने कितने पन्ने खोल कर रख दिए। अनजान से भी यूं बात कर रहा है, जैसे बरसों का याराना हो। ये लोग, जो यहां आ कर बस गए हैं, अंदर से कितने खाली हैं कि किसे बताएं अपने दिल की बातें। देश में कितनी बार बताएं और यहां कोई सुनने वाला नहीं, तो करें क्या ! ना जाने कितने बलवीर सिंह हैं यहां, जो अंदर ही अंदर अपनी पहचान के लिए छटपटाते हैं और निकासी की गली तलाशते रहते हैं। बलवीर सिंह जाते-जाते मोबाइल नंबर लिखा गए, 'आधी रात को भी जरूरत हो तो बंदा हाजिर हो जाएगा। आपको वापसी में एयरपोर्ट छोड़ने तो मैं ही चलूंगा अपनी कार से' बलबीर सिंह ने वादा लिया है।

यहां 'बूजो' दिन में सैकड़ों बार बोलना या सुनना ही होता है। शुरू में तो आदत नहीं थी, लेकिन हर आता-जाता अगर 'बूजो' कह रहा है तो आपके मुंह से भी निकल ही आता है। हफ्ते भर में रफत हो गई है कि बेवजह भी बूजो बोलना ही है। ऐसा भी हुआ कि किसी ने नाम पूछा तो मेरे मुंह से बूजो निकल गया। परिचित से ही दुआ-सलाम नहीं, हर किसी से हालचाल पूछने का रिवाज है यहां। बूजो के साथ मुस्कुराहट जरूरी है। शैलेंद्र ने 'किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार', शायद ऐसा ही कुछ देख कर लिखा होगा। इतना मीठा-मीठा कि अचरज होता है सभी को 'शुगर' क्यों नहीं होती। अपने यहां जब तक दिन भर में दो-चार बार मूड खराब ना हो, हमें मजा कहां आता है। शायर कहता है ना 'जिनको मतलब नहीं रहता, सताते भी नहीं।' हर दिन इस उम्मीद से निकलता हूं कि आज तो कहीं कोई माई का लाल, पीला हो रहा होगा, मगर धन्य है यहां, हर दिन निराश ही करता है मुझे। ठेठ लोगों से तो वैसे भी कोई उम्मीद नहीं है, लेकिन अपने वाले ऐसे धोखा देंगे, यह भविष्य के लिए खतरनाक संकेत है।

तभी नीता अंबानी के 'इंडिया हाउस' में शिव्यांश शर्मा से मुलाकात हुई। वालेंटियर है। पूछा 'यार, यहां कोई लड़ता-झगड़ता नहीं है, कोई हल्ला-गुल्ला नहीं, हंगामा नहीं, कैसे जीते हैं भला ! हमारे वाले भी यहां आकर कितने मासूम, कितने भोले-भाले हो गए हैं?'

'तीन साल से यहां हूं, मैं भी ऐसा ही महसूस कर रहा था, लेकिन अब विचार बदल रहा हूं। दरअसल, हम भारतीय जब भीड़ में होते हैं ना, तभी अपनी वाली दिखाते हैं, अकेला तो महा-शरीफ हो जाता है। इंडिया-हाउस में कभी देर रात को आकर देखिए, आपकी सारी हसरतें पूरी हो जाएंगी। ये लोग थोक में आते हैं और फिर ऐसी-ऐसी हरकतें करते हैं कि बाउंसर बुलाने पड़ते हैं। पांच टिकट खरीदेंगे और सात को अंदर घुसाने की कोशिश करेंगे, फिर उसके लिए पांच की जगह पचास यूरो ही क्यों ना खर्च हो जाएं। कुछ तो ऐसे आते हैं कि हमें यूरो पकड़ाते हैं कि टिकट नहीं है, खाना ही खिला दो, यानी जितने गलत काम हो सकते हैं, हर तरह से करवाने की कोशिश करते हैं। हर उम्र के ऐसी हरकतें कर रहे हैं। शराब की बोतल खोल कर वहां खड़े लोगों पर उड़ाते हैं, ये भीड़ में शेर हो जाते हैं और बाकी समय म्याऊं-म्याऊं करते हैं। इंडिया-हाउस वैसे तो विदेशियों के लिए है, लेकिन भारतीय ऐसे टूटे पड़ रहे हैं, जैसे कभी देखा ही नहीं हो। कभी-कभी तो शर्म आने लगती है, इनकी हरकतों पर।'

सुन कर अच्छा लगा कि रवायत कायम है। मैं फोकट में ही जान हलाकान किए था कि हम बिगड़ रहे हैं। उम्मीद की किरणें अभी आकाश में चमक रही हैं। उम्मीद पर दुनिया कायम होने का दावा यूं ही तो नहीं किया होगा ना !

वृद्धों की दुनिया

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

बुजुर्ग क्या करें किससे कहें अपनी पीड़ा

वृद्धों की दुनिया में जरूरतें बहुत ज्यादा नहीं होती , उनकी आवश्यकता सीमित होती पर वह भी हम सब ठीक से जुटा नहीं पाते । उन्हें बस समय से खाना और समय से दवा चाहिए थोड़ा देखभाल, कोई उनकी सुनने वाला हो जब वे कुछ कह रहे हों तो ध्यान से बस सुनने की जरूरत है । वे हमारे लिए ज्ञान और अनुभव का स्रोत हैं पर हममें से अधिकांश सुनना नहीं चाहते, सब सुनाने के फेर में रहते हैं । बुजुर्ग जो कुछ कह रहे हैं - उसमें अनुभव ज्ञान है, संसार की बातें हैं और पूरा वह लोक है जिसे वे जीते हैं पर हम उनके ज्ञान को पुरानी बातें कह उड़ा देने के पक्ष में रहते हैं । जैसे कि उनकी बातें किसी काम की हों ही नहीं । अब भला बुजुर्ग कैसे सुने जिसके पास कुछ नहीं है वह भी सुनाने के लिए लगा है फिर क्यों सुने ? उनके पास अनुभव है , ज्ञान है और यह पता है कि क्या करना है फिर वो किसी की भी क्यों सुने ?

और क्यों सुने ? अब तो आराम और समय मिला है जब कुछ मन की कर सकें । जब इस तरह हम संसार को देखना शुरु करते हैं तो संसार का रंग आंखों के आगे आ जाता है । इस रंग में बुजुर्ग को पूरा उत्साह के साथ रहने की जरूरत है और उनके लिए माहौल ऐसा हो जिसमें जीवन सही ढ़ंग से चलता हुआ दिखें ।

वृद्धों की दुनिया क्या होती है ? वृद्धों को हमारी जरूरत क्यों और कैसे हैं ? हमें क्यों वृद्धों के बारे में जानना जरूरी लगता है । आखिर हमारा समाज कहां जा रहा है ? क्यों हम सब अपने आसपास के बुजुर्गों का वह मान सम्मान नहीं कर पाते जो करना चाहिए । उनकी जरूरते, उनकी दुनिया क्यों नहीं हम सबकी दुनिया बन पाती है क्यों हम सब उनसे किनारा कसने में ही लगे रहते हैं । वृद्ध जहां घर परिवार की उपलब्धि और शोभा होते हैं वहां सुख समृद्धि आप से आप आ जाती है। यह सामाजिक उपलब्धि है कि हम अपने बुजुर्गों का सम्मान करें । केवल बातों से नहीं बल्कि वास्तविक रूप में करने की जरूरत है । वृद्ध समस्या न होकर हमारे समाज की वास्तविक पहचान होनी चाहिए । उनके कार्य का सम्मान होना चाहिए आज उनसे कार्य की नहीं उनके ज्ञान और अनुभव को स्वीकार करने की जरूरत है । आज किसी एक जगह से नहीं वल्कि हर जगह यह समस्या बन कर सामने आ रही है कि वृद्धों का क्या करें। इन्हें कैसे संभालें? इनके पास कौन बैठे ? कौन समय दें किसी के पास समय नहीं है किसी के पास धैर्य नहीं है कि रुक कर एक पल के लिए हाल चाल ले लें। उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछ लें सभी बस इस भागती हुई दुनिया में भाग रहे हैं । यह हाल किसी एक जगह का नहीं है सब जगह ऐसा ही है ।

वृद्धों की दुनिया केवल महानगरों तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह मझोले शहर से लेकर कस्बे तक है । गांव जरूर इस तरह की समस्या से बचें हैं । अभी नागरिक अधैर्य गांव में उस तरह नहीं आया है जैसे कि शहरों में देखने को मिलता है । क्यों आज वृद्धों की समस्या सामने आ रही है और बहुतायत से आ रही है । कहां पर चूक हो रही है कि पीढ़ियां इस कदर आपस में टकरा रही हैं कि जिन बुजुर्गों को अपने घर पर अधिकार व सम्मान होता था ।

उन्हें ही बेदखल किया जा रहा है या बेदखल नहीं कर रहे हैं तो ऐसे ऐसे तरीके निकाल रहे हैं कि हमारे बुजुर्ग मौन होते जा रहे हैं । उनकी उपस्थिति नगण्य होती जा रही है , उनका निर्णय अनसुना किया जा रहा है और अंततः अस्तित्वहीनता का शिकार बनाकर उन्हें अकेले तड़पने के लिए छोड़ दिया जा रहा है । यह सब तथाकथित सभ्य समाज पढ़ें लिखे लोगों और आधुनिक व संवेदनशील कहे जा रहे लोगों के घरों में हो रहा है । पहले 'बूढ़ी काकी' कहानी की बूढ़ी काकी एकाद घरों की कहानी होती थी जो संसाधनों से लाचार होने के कारण अपने बेटे बहू से उपेक्षा का शिकार होती थी और बूढ़ी काकी के रूप में कहानी का चित्र बन आंखों के सामने आती थी पर आज एक दो बूढ़ी काकी भर नहीं वे सारे बुजुर्ग जो सम्पन्न हैं, जो नौकरी पेशा रहे हैं जो सक्षम होते थे , जिनकी तूती बोलती थी - घर आफिस सब जगह आज उनकी बोलती अपने ही बच्चों के आगे बंद है । शिकायत किससे करें । यह उपेक्षा अपनों से है ऐसे में कुछ करते भी नहीं बनता है । किससे कहें कि मेरा सम्मान नहीं हो रहा है यह कोई और नहीं उसके अपने ही हैं । अपने ही पुत्रों से आखिर क्या और क्यों कहें कुछ कहते भी नहीं बनता और इन स्थितियों में रहना भी आसान नहीं लगता पर बुजुर्ग कहां जाएं ? उनके पास मौन के अलावा कोई रास्ता सुझता ही नहीं । जब अपने ही बेगाने हो जाते थे , जब अपने ही आंखें मोड़ लेते हैं तो किसके सामने जुबान खोले ? जुबान खोलते ही मार दिये जाने का डर दिखता है । इसलिए आज ज्यादातर बुजुर्ग पार्कों में अपने उम्र के लोगों के बीच या वृद्धाश्रम में आकर दो चार घंटे हंसी खुशी जीवन बिता लेते हैं या किसी मंदिर किसी चौबारे चौपाल पर बैठ हंसी ठठ्ठा कर लेते हैं । यह सब उन्हें तब मुनासिब होता है जब अपनी संपत्ति का बहुत सारा हिस्सा बेटे बहु को दे चुके होते हैं। या दिए जाने की उम्मीद में घर में जगह मिली होती है । आनाकानी करने पर मार दिए जाने का डर लगता है । बड़ा विचित्र है पर सत्य है ।

अक्सर बुजुर्ग इस तरह मिलते हैं कि वे क्या करें ? किससे कहें अपनी पीड़ा ? कोई सुनता नहीं ? भगवान भी पता नहीं कहां मुंह मोड़ कर बैठे हैं कोई सुनता ही नहीं । चलों जब तक हैं तब तक भगवान की सेवा बाती कर लें । कुछ लोक परलोक सुधार लें । इस तरह कालोनी के बुजुर्ग मंदिर, चौपाल, पुलिया पर बैठे मिलते हैं । कोई परेशानी नहीं है पर सब इस उम्मीद से देखते हैं कि समाज उनका सम्मान करें । लोग इज्जत करें कुछ नहीं तो उनकी बात सुने । पर कोई सुनता नहीं तो हमारे समय के बुजुर्ग मौन में चले जाते हैं । जो इन स्थितियों के बाद भी सुनना ने के लिए मुंह फाड़े खड़े हैं तो वे नक्कारखाने में बोलते रहते हैं जिनकी आवाज कहीं सुनाई नहीं देती है । यह समस्या किसी एक घर या एक बुजुर्ग की नहीं है ।

हालात इस तरह बिगड़ते जा रहे हैं कि कहना पड़ता है कि बुजुर्गों के साथ उपेक्षा का व्यवहार हो रहा है । इसके पीछे सबसे बड़ा कारण है समाज में धैर्य और संवेदनशीलता की कमी तेजी से आयी है । आज स्थिति यह हो रही है कि हममें से अधिकांश लोग ऐसे हैं जो केवल और केवल अपनी जरूरतों अपनी उपस्थिति और अपनी जगह के लिए जीना चाहते हैं । अपने से अलग दूसरों का अस्तित्व किसी रूप में स्वीकार नहीं है । यहीं कारण है कि बुजुर्गों के प्रति प्रतिष्ठा और सम्मान का व्यवहार करना नहीं आता है । यह हर आदमी भूल जाता है कि एक दिन वह भी बुजुर्ग होगा । एक दिन कमजोर होगा और उसे भी सहारे की जरूरत पड़ेगी । आज जो प्रौढ़ है जो अपने आसपास के बुजुर्गों का सम्मान नहीं करते वे भूल जाते हैं कि एक दिन उन्हें भी यही जीवन , यहीं उपेक्षा देखना पड़ सकता है।

पेड़-पौधों पर लदे हमारे विश्वास

विचार

अनुपमा तिवाड़ी

लेखिका ट्री वुमन ऑफ राजस्थान के नाम से चर्चित हैं।

मैं पिछले 14 वर्षों से सार्वजनिक स्थानों पर पेड़ - पौधे लगा रही हूँ। इस दौरान मुझे कितने ही अजीबोगरीब अनुभव भी हुए। कोई दो वर्ष पहले की बात है। मैं कुछ बरगद के पेड़ ले कर तालाब की पाल पर उन्हें लगाने के लिए ले कर गई। वहाँ मैंने कुछ युवाओं को भी इकट्ठा किया और गड्ढा खोदने के बाद मैंने एक युवा लड़के से कहा -बेटा, तुम इसमें यह पेड़ रखो मैं तुम्हारी फ़ोटो लेती हूँ, पास ही खड़ी एक महिला ने कहा 'ई ने रहबा दो, थे ही रखो' मैंने ऐसा कहने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि 'फिर या तो बरगद ही रहे या आदमी ही रहे' मैंने कहा कि मैं भी तो लगा रही हूँ, इस पर उनका कहना था कि 'लुगाईन को काई कौन होय'।

अभी हाल ही में सोशल मीडिया पर एक वीडियो देखा जिसमें बताया जा रहा था कि कढ़ी पत्ता का पेड़ यदि घर के मुखिया से लंबाई में ऊपर चल जाता है तो घर में कंगाल हो जाता है। मज़े की बात है कि मेरे घर में कढ़ी पत्ता घर में रहने वाले चारों लोगों से ऊपर निकल चुका है और अभी तो घर में दाल - रोटी चल रही है।

एक बार एक बस स्टैन्ड पर पीपल के पेड़ लगा रही थी तब एक व्यक्ति ने मेरे पास या कर कहा 'अरे इन ऑटोवालों के सामने मत लगाओ ये उखाड़ देंग' ये पीपल अपना पेड़ है न ! अपना, मतलब समझे? बहुत से अंधविश्वासों और मान्यताओं के चलते अब इमली और खजूर मुसलमान पेड़ हो गए हैं और नारियल, तुलसी, पीपल, बरगद, विल्वपत्र, आंवला हिन्दू पेड़।

पेड़ सदा चुपचाप बस देते हैं चाहे कोई उनके नीचे खड़े हो कर छाया ले, कोई फूलों की खुशबू ले, कोई फल ले, कोई हवा ले। पेड़ों ने बस देना सीखा है। आयुर्वेद तो पूरा पेड़ों और जड़ी बूटियों पर ही टिका है। नीम से 165 प्रकार की इंसानों और जानवरों के लिए औषधियाँ बनाई जाती हैं, सहजना में 300 प्रकार के गुण होते हैं, तुलसी के पौधे से 20 फुट दूरी तक टी. बी के कीटाणु नहीं आते। कितने ही औषधीय पौधे लौग, कालीमिर्च, गिलोय, सफेद मूसली हमारे जीवन से जुड़े हैं। पहाड़ों से जब पानी पेड़ों को छूकर नीचे गिरता है तो उसकी शुद्धता और गुणात्मकता का हम अंदाजा नहीं लगा सकते। बस वो तो गिरता है, बस गिरता है। जो चाहे अपनी आत्मा तृप्त कर ले !

उम्र की घड़ी ...

फोटो- गिरीश शर्मा

प्रकृति में उल्लास

रिमझिम सी बारिश की बूंदे,
जब-जब धरा पर आती है।

संग अपने नई उम्मीदों का,
एक नया संदेशा लाती है।

अमृत सी बूंदे जब उसकी,
पड़ती है प्यासी ज़मी पर,

खिल उठता है रोम-रोम उसका,
और फिर से वो मुस्काती है।

खिल उठते है आँचल में उसके,

रंग-बिरंगे से सुमन,
जिसकी खुशबू से प्रसन्नचित होकर,
और प्रकृति भी उल्लास मनाती है।

- निधि अग्रवाल

शांति और सुकून के लिए 'विरोध' जरूरी

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

बीते रविवार लदन के कैमडेन माकेट में था, अचानक दोस्त का फोन आया- 'तुम कहां हो? 'लंदन में।' 'तुरंत घर के लिए निकलो, क्योंकि खबर आ रही हैं कि कल जैसे उपद्रवी आज भी शहरों की सड़कों पर निकलने वाले हैं।' खैर, फोन करने वाले का शुक्रिया अदा किया और प्लान के मुताबिक ही सारे काम निपटाए, लेकिन पूरी शाम यह बात दिमाग से निकली नहीं।

आखिर तीसरे ही शहर में बैठे इंसान को यह चिंता हो जाए कि कोई अपना घर से बाहर तो नहीं घूम रहा है, इसका मतलब है कि दंगा करके खौफ फैलाने की मंशा रखने वाले लोग कहीं न कहीं कामयाब हो रहे हैं। कई लोगों ने यह समझाया है कि शाम को घर से न निकलो, कई ने पूछा है कि अगर आसपास वाले से कोई गड़बड़ की चिंता हो तो घर में अकेले न रहो और ऐसी ही कई सलाह जिन पर कान देना, मतलब इन दंगाइयों को जीत दे देना ही होगा। उनतीस जुलाई का दिन बुरा था, क्योंकि दिमागी परेशान सत्रह बरस के लड़के ने बच्चों के कैंप में कई को चाकू से घायल किया और तीन बच्चियों की मौत हो गई। उसके बाद के एक-दो दिन तो शोक में ही बीते, क्योंकि जिस तरह से बच्चों पर हमला हुआ और जान चली गईं, न सिर्फ वो शहर बल्कि पूरा देश ही दुःख मनाता रहा। उसके बाद सोशल मीडिया पर झूटी खबर कि यह काम गलत तरह से आए मुस्लिम लड़के का है। भली और सच खबर भले ही न फैले, ऐसी झूटी खबर तो जंगल में आग की तरह फैलती हैं (यहां बताना जरूरी है कि यह शिनाख्त हो गई है कि किसने इस खबर को सोशल मीडिया पर फैलाया है)।

दुःख देखते ही देखते गुस्से में बदल गया और अचानक मुस्लिम और अप्रवासी होना अपराध हो गया और इन लोगों का फैसला भीड़ करने लगी। बीते शनिवार और रविवार को यूके के कई शहरों में जिस तरह का बलवा हुआ, खौफनाक था, दुकानें जला दी गईं, लोगों को कार से निकाल कर मारने की कोशिश की गई, पुलिस की कार जला दी गई और कई घायल हुए। वो सब हुआ, जो दुनिया में किसी भी दंगा ग्रस्त इलाके में होता है। उन तस्वीरों और वीडियो को देख कर लग ही नहीं रहा था कि यह आसपास के शहरों में हो रहा है। यूं लगने लगा जैसे पुराने दिन लौट आए हों, जब इस देश की सड़कों पर खुलेआम 'पाकी' कहना आम बात थी। ये भूरी चमड़ी वाले एक से ही दिखते हैं और इसी के चलते भारतीय और पाकिस्तानी का फर्क उन्हें कभी समझ ही नहीं आएगा।

नए प्रधानमंत्री और नई सरकार को आए थोड़े ही दिन हुए हैं और यह त्रासदी सामने आ गई, लेकिन सरकार अभी तक इन दंगों को काबू में करने और दंगाइयों को कड़ी सजा देने की बात कह रही है, लेकिन जो बीते बुधवार को हुआ, उसने साबित कर दिया कि आम इंसान सिवाय शांति और सुकून की जिंदगी से ज्यादा कुछ पसंद नहीं करता है। बुधवार को सुबह से ही खबर आ रही थीं कि दंगाइयों ने इन शहरों को टारगेट करने का प्लान बनाया है। शाम होते-होते कई दुकानें बंद हो गई थीं, सड़कें सुनसान थीं और फिर जो हुआ उसे देख, बात करके ही आंखें नम हो जाती हैं, क्योंकि उस दिन दंगाइयों से कई गुना ज्यादा लोग सड़कों पर थे और अप्रवासी और इस्लाम को मानने वालों के हक में तख्तियां लिए हुए थे, गाने गा रहे थे। यह लोग सबको साथ लेकर सबके भले की बात करने सड़कों पर उतरे थे।

लिवरपूल मस्जिद के सामने जब दंगाइयों का हुजूम जमा हो गया तो इन लोगों ने मस्जिद के किचन में ही चाय और नाश्ता तैयार किया और उन्हें खिलाया-पिलाया। बस इसी गांधीगिरी के चलते न सिर्फ दंगाइयों से संवाद क़ायम हुआ बल्कि अपनी बात कहने का भी मौका मिला। ऐसी ही कोशिशों का नतीजा है कि तीन दिन से खैरियत पूछने का कोई फोन नहीं आया है।

यह कब तक चलेगा कोई नहीं जानता, लेकिन साफ है अपनी बात कहने के लिए अगर दंगाई सड़कों पर उतर सकते हैं तो उनका विरोध करने के लिए भी हर उस इंसान को सड़क पर आना होगा और अपनी आवाज शामिल करना होगी।